UGC NET Sanskrit Memory Based Question paper- 3 JAN 2026 SHIFT -2

Q1. रसदोषेषु एते गण्यन्ते –

A. अकाण्डे रसच्छेदः

B. स्वशब्देन रसोक्तिः

C. निहतार्थता

D. स्वशब्देन स्थायिभावोक्तिः

E. अभवन्मतयोगता

समुचितं विकल्पं चिनुत -

(a) A, B, D केवलम्

(b) A, B, C केवलम्

(c) B, C, D केवलम्

(d) C, D, E केवलम्

Ans. (a)

Sol. परिचय: काव्यशास्त्र के ग्रंथों, विशेषकर आचार्य मम्मट कृत 'काव्यप्रकाश' के सातवें उल्लास में रस की रसानुभूति में बाधा डालने वाले तत्वों को 'रसदोष' कहा गया है।

व्याख्या:

आचार्य मम्मट ने रसदोषों का विस्तार से वर्णन किया है। दिए गए विकल्पों में से रसदोष निम्नलिखित हैं:

• अकाण्डे रसच्छेदः (A): रस का प्रवाह चल रहा हो और बिना किसी उचित कारण या अवसर के उसे बीच में ही समाप्त कर देना रसदोष कहलाता है। जैसे किसी अत्यंत श्रृंगारिक प्रसंग के बीच अचानक शुष्क दार्शनिक चर्चा शुरू कर देना।

• स्वशब्देन रसोक्तिः (B): रस की प्रतीति विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से होनी चाहिए। यदि कवि व्यंजना का सहारा न लेकर सीधे 'श्रृंगार रस' या 'करुण रस' जैसे शब्दों का प्रयोग करता है, तो वह दोष माना जाता है।

• स्वशब्देन स्थायिभावोक्तिः (D): रस के आधारभूत 'स्थायिभाव' (जैसे रति, हास, शोक आदि) को उनके नाम से सीधे कहना भी दोष है। भावों का आस्वादन अभिनय या शब्दों के प्रभाव से होना चाहिए, न कि उनके नामोच्चारण से।

अतः विकल्प A, B और D रसदोषों की श्रेणी में आते हैं।

प्रमुख रसदोष तालिका:

दोष का नाम	स्वरूप (लक्षण)	प्रभाव
स्वशब्दाभिधान	रस, स्थायी या व्यभिचारी भाव को नाम से कहना	व्यंजना का अभाव
अकाण्डे प्रथन	अनुचित स्थान पर रस का विस्तार करना	रसानुभूति में बाधा
अकाण्डे छेद	उचित स्थान से पूर्व ही रस को समाप्त करना	सहृदय की विरक्ति
विभाव-कष्टकल्पना	विभावों की कठिनता से प्रतीति होना	रस प्रतीति में विलम्ब

रोचक तथ्य:

• निहतार्थता (C): यह एक 'पद दोष' है। इसमें ऐसे शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसके दो अर्थ हों, लेकिन लोक में प्रसिद्ध अर्थ को छोड़कर अप्रसिद्ध अर्थ ग्रहण किया जाए।

• अभवन्मतयोगता (E): यह एक 'वाक्य दोष' है। इसमें शब्दों का संबंध उस अर्थ से नहीं बैठ पाता जो कवि कहना चाहता है।

• दोष की परिभाषा: मम्मट के अनुसार— *"मुख्यार्थहतिर्दोषो रसश्च मुख्यः"* अर्थात् मुख्य अर्थ (रस) के अपकर्ष या हानि करने वाले तत्व ही दोष हैं।

Q2. प्रथमसूच्या सह द्वितीयसूचीम् सुमेलयत-

List I		List II	
A.	बाल गंगाधर तिलक	I.	1500 ई. पू.- 1200 ई. पू.
B.	वेबर	II.	6000 ई. पू.-4000 ई. पू.
C.	एच. याकोबी	III.	25000 ई. पू.
D.	अविनाश चन्द्र दास	IV.	4500 ई. पू.- 2500 ई. पू.

अधस्तनेषु समीचीनं विकल्पम् चिनुत-

(a) A-II.B-I,C-IV,DIII
(b) A-I,B-II,C-III,DIV
(c) A-II,B-I,C-III,DIV
(d) A-IV,B-III,C-II,DI

Ans. (a)

Sol. परिचय

इस प्रश्न में विभिन्न विद्वानों द्वारा वेदों के रचनाकाल के संबंध में दिए गए मतों का मिलान करना है।

व्याख्या

• A. बाल गंगाधर तिलक (A-II): बाल गंगाधर तिलक ने ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर वेदों का काल 6000 ई. पू. - 4000 ई. पू. निर्धारित किया था। उन्होंने अपनी पुस्तक 'द आर्कटिक होम इन द वेदाज' (The Arctic Home in the Vedas) और 'ओरायन' (Orion) में वेदों के प्राचीनता को सिद्ध करने का प्रयास किया, जिसमें उन्होंने यह मत दिया कि वैदिक काल की शुरुआत ओरियन नक्षत्र के उदय से हुई थी।

• B. वेबर (B-I): प्रसिद्ध जर्मन इंडोलॉजिस्ट अल्ब्रेक्ट वेबर ने वैदिक साहित्य के भाषा विज्ञान और साहित्यिक विकास के आधार पर वेदों का काल 1500 ई. पू. - 1200 ई. पू. माना। यह यूरोपीय विद्वानों के बीच सबसे स्वीकृत मतों में से एक है।

• C. एच. याकोबी (C-IV): हर्मन याकोबी ने भी ज्योतिषीय साक्ष्यों के आधार पर वेदों का काल निर्धारित किया। उन्होंने यह तर्क दिया कि वैदिक काल की शुरुआत चित्रा नक्षत्र के समय हुई थी, जिसके आधार पर उन्होंने इसका काल 4500 ई. पू. - 2500 ई. पू. के बीच माना।

• D. अविनाश चन्द्र दास (D-III): अविनाश चन्द्र दास एक भारतीय विद्वान थे जिन्होंने 'ऋग्वेदिक इंडिया' (Rigvedic India) नामक पुस्तक लिखी। उन्होंने भूगर्भिक और पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर वेदों को अत्यंत प्राचीन माना और इसका काल 25000 ई. पू. तक निर्धारित किया। हालांकि, यह मत अधिकांश विद्वानों द्वारा स्वीकार्य नहीं है।

सही विकल्प

उपरोक्त व्याख्या के अनुसार सही मिलान है: A - II (बाल गंगाधर तिलक - 6000 ई. पू. - 4000 ई. पू.) B - I (वेबर - 1500 ई. पू. - 1200 ई. पू.) C - IV (एच. याकोबी - 4500 ई. पू. - 2500 ई. पू.) D - III (अविनाश चन्द्र दास - 25000 ई. पू.)

यह मिलान विकल्पों में उपलब्ध नहीं है, इसलिए प्रश्न में त्रुटि है। प्रश्न के दिए गए विकल्पों में से सबसे निकटतम विकल्प (a) है, लेकिन उसमें भी D-III की जगह A-II, B-I, C-IV, D-III होना चाहिए।

Q3. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत-

List-I	List-II
a. शूलपाणिः	i. अपरार्कः
b. मित्रमिश्रः	ii. बालक्रीडा
c. अपरादित्यः	iii. दीपकलिका
d. विश्वरूपः	iv. वीरमित्रोदयः

(a) a-iv, b-i, c-iii, d-ii
(b) a-iii, b-iv, c-i, d-ii
(c) a-i, b-iii, c-ii, d-iv
(d) a-ii, b-iv, c-i, d-iii

Ans. (b)

Sol. परिचय: यह तालिका हिंदू धर्मशास्त्र के महत्वपूर्ण ग्रंथ याज्ञवल्क्य स्मृति (मुख्यतः) और अन्य स्मृतियों पर लिखी गई प्रसिद्ध टीकाओं (Commentaries) तथा उनके टीकाकारों से संबंधित है।

व्याख्या:

• (a) शूलपाणिः → (iii) दीपकलिका:

○ शूलपाणि 14वीं शताब्दी के एक प्रमुख धर्मशास्त्री थे।

○ उनकी प्रसिद्ध टीका का नाम दीपकलिका है, जो याज्ञवल्क्य स्मृति पर लिखी गई है।

○ उन्होंने 'स्मृतिविवेक' जैसे अन्य ग्रंथ भी लिखे हैं।

• (b) मित्रमिश्रः → (iv) वीरमित्रोदयः:

○ मित्रमिश्र 17वीं शताब्दी के उत्तर भारत (ओरछा) के प्रसिद्ध धर्मशास्त्री थे।

○ उनका विशाल धर्मशास्त्र ग्रंथ वीरमित्रोदयः कहलाता है, जो 'वीरमित्रोदय-संस्कारप्रकाश', 'वीरमित्रोदय-अह्निकप्रकाश' जैसे अनेक 'प्रकाश' अध्यायों में विभक्त है।

• (c) अपरादित्यः → (i) अपरार्कः:

○ अपरादित्य (या अपरार्क) 12वीं शताब्दी के शिलाहार राजा थे।

○ इनकी टीका याज्ञवल्क्य स्मृति पर है और यह स्वयं राजा के नाम पर ही 'अपरार्कः' नाम से प्रसिद्ध है। यह टीका याज्ञवल्क्य स्मृति की सबसे विस्तृत टीकाओं में से एक है।

• (d) विश्वरूपः → (ii) बालक्रीडा:

○ विश्वरूप 9वीं शताब्दी के एक प्रारंभिक टीकाकार थे, जो आदि शंकराचार्य के समकालीन माने जाते हैं।

○ उनकी प्रसिद्ध टीका का नाम बालक्रीडा है, जो याज्ञवल्क्य स्मृति पर लिखी गई सबसे पुरानी उपलब्ध टीकाओं में से एक है।

Q4. रामायणमुपजीव्यमस्ति -

1. नैषधीयचरितस्य
2. सेतुबन्धस्य
3. भट्टिकाव्यस्य
4. दूतवाक्यस्य

एतेषु कानि कथनानि सम्यक् ?

(a) 1 & 2 केवलम्

(b) 2 & 3 केवलम्

(c) 3 & 4 केवलम्

(d) 1, 2 & 4 केवलम्

Ans. (b)

Sol. परिचय उपजीव्य का अर्थ उस मूल ग्रन्थ से है, जिसकी कथावस्तु या कथानक को आधार बनाकर कोई परवर्ती कवि अपनी रचना करता है। यहाँ यह देखा गया है कि कौन-सी रचनाएँ वाल्मीकि रामायण की कथा पर आधारित हैं।

व्याख्या 2. सेतुबन्धस्य (सही) • ग्रंथ: सेतुबन्ध (या रावणवधम्)

• रचनाकार: प्रवरसेन द्वितीय (वाकाटक वंश के शासक)

• भाषा: यह काव्य प्राकृत भाषा के महाराष्ट्र भेद में लिखा गया है।

• उपजीव्य: इसकी कथावस्तु रामायण के किष्किन्धाकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक की है, जिसमें राम द्वारा सेतु निर्माण और रावण वध की कथा प्रमुख है।

3. भट्टिकाव्यस्य (सही) • ग्रंथ: भट्टिकाव्य (या रावणवधम्)

• रचनाकार: भट्टि

• उद्देश्य: यह काव्य व्याकरण और अलंकार के नियमों को उदाहरणों के माध्यम से सिद्ध करने के लिए लिखा गया था (शास्त्रकाव्य)।

• उपजीव्य: इसकी कथावस्तु भी पूरी तरह से रामायण पर आधारित है, जिसमें रावण वध तक की कथा का वर्णन किया गया है।

रोचक तथ्य

1. नैषधीयचरितस्य (गलत) • ग्रंथ: नैषधीयचरितम्

• रचनाकार: श्रीहर्ष

• उपजीव्य: इसकी कथा का मूल स्रोत महाभारत के वन पर्व में वर्णित नल-दमयन्ती की कथा है। इसका रामायण से कोई सीधा संबंध नहीं है।

4. दूतवाक्यस्य (गलत) • ग्रंथ: दूतवाक्यम् (एकांकी नाटक)

• रचनाकार: भास (इनके 'रूपक-चक्र' के 13 नाटकों में से एक)

• उपजीव्य: इसकी कथा का मूल स्रोत महाभारत का उद्योग पर्व है, जिसमें कृष्ण पांडवों के दूत बनकर दुर्योधन की सभा में जाते हैं। इसका रामायण से कोई सीधा संबंध नहीं है।

Q5. याज्ञवल्क्यस्मृतौ व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणे स्तः ?

(A) राजधर्मप्रकरणम्

(B) विवाहप्रकरणम्

(C) लेख्यप्रकरणम्

(D) दिव्यप्रकरणम्

अत्र समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) (A) एवम् (B)

(b) (B) एवम् (C)

(c) (C) एवम् (D)

(d) (D) एवम् (A)

Ans. (c)

Sol. परिचय

याज्ञवल्क्य स्मृति हिन्दू धर्मशास्त्र में मनुस्मृति के बाद दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। यह स्मृति तीन अध्यायों (आचाराध्याय, व्यवहाराध्याय और प्रायश्चित्ताध्याय) में विभाजित है। व्यवहाराध्याय विशेष रूप से कानूनी, न्यायिक और राज्य संबंधी मामलों पर केंद्रित है।

व्याख्या

याज्ञवल्क्य स्मृति के व्यवहाराध्याय में समाविष्ट प्रकरण:

• व्यवहाराध्याय का उद्देश्य:

○ यह अध्याय न्यायिक प्रक्रिया और विभिन्न प्रकार के विवादों (विवादपद) के निपटारे से संबंधित है। इसमें 18 प्रकार के विवादपदों (जैसे ऋण, धरोहर, संपत्ति का बँटवारा) का वर्णन किया गया है।

• लेख्यप्रकरणम् (C):

○ लेख्य का अर्थ है दस्तावेज या लिखित साक्ष्य।

○ इस प्रकरण में विभिन्न प्रकार के कानूनी दस्तावेजों (जैसे दानपत्र, ऋणपत्र, क्रय-विक्रय पत्र) को लिखने की विधि, उनकी वैधता, और साक्ष्य के रूप में उनके महत्त्व का विस्तृत वर्णन किया गया है।

○ न्यायिक कार्यवाही में साक्ष्य के रूप में लिखित दस्तावेज महत्त्वपूर्ण थे।

• दिव्यप्रकरणम् (D):

○ दिव्य का अर्थ है ईश्वरीय परीक्षा या शपथ।

○ यह प्रकरण उन परिस्थितियों से संबंधित है जब प्रत्यक्ष साक्ष्य या दस्तावेजी साक्ष्य उपलब्ध नहीं होते थे।

○ ऐसे में, सत्य की जाँच के लिए अग्नि-दिव्य, जल-दिव्य, विष-दिव्य जैसी विभिन्न प्रकार की ईश्वरीय परीक्षाओं (कठिन परीक्षाएँ) का विधान किया गया था।

रोचक तथ्य

विवाहप्रकरणम् (B) याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रथम अध्याय (आचाराध्याय) का हिस्सा है, क्योंकि विवाह को व्यक्तिगत आचरण और सामाजिक व्यवस्था का आधार माना जाता है। राजधर्मप्रकरणम् (A) भी व्यवहाराध्याय का एक महत्त्वपूर्ण प्रकरण है।

Q6. पौर्वापर्य अनुसारेण यथाक्रमं योजयतु-

A. वृद्धसंयोग

B. राजप्रणिधि

C. गूढपुरुषोत्पत्तिः

D. गूढपुरुषप्रणिधिः

अधस्तनेषु समुचितं विकल्पं चिनुत-

(a) A, C, D, B
(b) D, B, C, A
(c) D, A, C, B
(d) C, A, B, D

Ans. (a)

Sol. परिचय: यह प्रश्न कौटिल्य अर्थशास्त्र के प्रथम अधिकरण (विनयाधिकारिक) के उन अध्यायों के क्रम पर आधारित है, जो राजा के प्रशिक्षण और गुप्तचर व्यवस्था के आरंभिक चरणों से संबंधित हैं।

व्याख्या:

अर्थशास्त्र का प्रथम अधिकरण (विनयाधिकारिक) राजा के अनुशासन और राज्य कर्मचारियों के चयन पर केंद्रित है, जिसका क्रम राजा के व्यक्तिगत विकास से लेकर राज्य की सुरक्षा तक चलता है।

1. A. वृद्धसंयोग :

○ तर्क: विनयाधिकारिक का आरंभ राजा के व्यक्तिगत प्रशिक्षण से होता है। राजा को पहले वृद्धों (अनुभवी/वरिष्ठ विद्वानों) के साथ संगति (संयोग) करनी चाहिए ताकि वह विद्या और विनय ग्रहण कर सके। यह राजा के लिए पहला कर्तव्य है, इसलिए यह सबसे पहले आता है।

2. C. गूढपुरुषोत्पत्तिः :

○ तर्क: राजा द्वारा विनय और इंद्रिय-विजय प्राप्त करने के बाद, अगला चरण राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यह चरण मंत्रियों के चरित्र की परीक्षा (उपधा-शुद्धि) के बाद आता है। राज्य की रक्षा के लिए सबसे पहले गुप्तचरों (गूढपुरुषों) को उत्पन्न (भर्ती/तैयार) किया जाता है। 'उत्पत्ति' का अर्थ यहाँ उनकी नियुक्ति/रचना से है।

3. D. गूढपुरुषप्रणिधिः :

○ तर्क: गुप्तचरों (गूढपुरुषों) की 'उत्पत्ति' (भर्ती) के तुरंत बाद, उनका 'प्रणिधिः' (तैनाती) या कार्य-संचालन आता है। इस अध्याय में वर्णित है कि गुप्तचरों को कहाँ, किस कार्य (जैसे, अग्निजीवी, विषदा) में और किस अधिकारी पर नियुक्त किया जाए। यह उनकी भर्ती के बाद का तार्किक कदम है।

4. B. राजप्रणिधि:

○ तर्क: गुप्तचरों को मंत्रियों और अधिकारियों (गूढपुरुषप्रणिधिः) पर तैनात करने के बाद, कौटिल्य राज्य के उच्च अधिकारियों (राजन्) के आचरण (प्रणिधि) को नियंत्रित करने के उपायों का वर्णन करते हैं, जैसे: 'राजपुत्ररक्षणम्' (राजकुमारों की रक्षा), 'अवरुद्धवृत्तम्' (महारानी का आचरण) आदि। 'राजप्रणिधि' इन सभी उच्चस्तरीय राजकर्मचारियों के विस्तृत आचार-नियमों को समाहित करता है और इसलिए यह बाद में आता है।

अतः अध्यायों का क्रम है: A (वृद्धसंयोग) → C (गूढपुरुषोत्पत्तिः) → D (गूढपुरुषप्रणिधिः)→ B (राजप्रणिधि)।

रोचक तथ्य:

• वृद्धसंयोग: यह अध्याय राजा के लिए 'त्रयी' (वेद), 'वार्ता' (कृषि, व्यापार) और 'दण्डनीति' (शासन कला) का ज्ञान अनुभवी वृद्धों से प्राप्त करने पर जोर देता है।

• गूढपुरुषोत्पत्तिः : इस अध्याय में विभिन्न प्रकार के गुप्तचरों (कापटिक, उदास्थित, गृहपतिक, वैदेहक, तापस) और उनके कार्यों का वर्णन है, जिन्हें 'संस्था' (स्थायी गुप्तचर) कहा जाता है।

• गूढपुरुषप्रणिधिः : इसमें 'संज्ञा' (संचार माध्यम) और 'सञ्चार' (घूमने वाले गुप्तचर) का भी वर्णन है, जो अधिकारियों पर निगरानी रखते हैं।

• राजप्रणिधि : 'राजपुत्ररक्षणम्' और 'अवरुद्धवृत्तम्' जैसे विषय यह दर्शाते हैं कि यह अध्याय राजा के परिवार और निकटतम लोगों की सुरक्षा और आचरण से संबंधित है।

Q7. क्रमबोधकप्रमाणेषु क्रमः –

A. स्थानम्

B. प्रवृत्तिः

C. अर्थः

D. मुख्यः

E. पाठः

समुचितं विकल्पं चिनुत --

(a) B,D,E,A,C
(b) A,B,C,D,E
(c) A,C,D,E,B
(d) C,E,A,D,B

Ans. (d)

Sol. परिचय: मीमांसा दर्शन (लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह) के अनुसार, जब अनेक अंगों का अनुष्ठान एक साथ करना हो, तब उनके 'क्रम' का निर्धारण करने के लिए छह प्रमाण माने गए हैं। इन्हें 'क्रमबोधक प्रमाण' कहा जाता है।

व्याख्या:

मीमांसा शास्त्र में इन छह प्रमाणों का एक निश्चित तार्किक और शास्त्रीय क्रम है, जो उनकी बलवत्ता के आधार पर निर्धारित है।

यह क्रम इस प्रकार है:

1. अर्थ (C): प्रयोजन या फल के आधार पर क्रम (जैसे: पहले यवागू पाक, फिर होम)।

2. पाठ (E): वेदमन्त्रों के पाठ के क्रम के अनुसार (जैसे: जिस क्रम में मन्त्र पढ़े गए हैं)।

3. स्थान (A): उपस्थित होने के क्रम के अनुसार (जैसे: साद्यस्क्रा याग में पशुओं का क्रम)।

4. मुख्य (D): मुख्य याग के क्रम के अनुसार अंगों का क्रम।

5. प्रवृत्ति (B): एक बार जिस क्रम से आरम्भ किया गया, उसी को बनाए रखना।

6. काण्ड (विकल्प में नहीं है): जो सातवाँ या गौण माना जाता है।

दिए गए विकल्पों के अनुसार सही शास्त्रीय अनुक्रम C, E, A, D, B (अर्थ, पाठ, स्थान, मुख्य, प्रवृत्ति) है।

क्रमबोधक प्रमाणों का संक्षिप्त विवरण

क्रम	प्रमाण का नाम	परिभाषा/विशेषता
1	अर्थ	जहाँ प्रयोजन के अनुसार क्रम निश्चित हो (यथा—पाक और होम)।
2	पाठ	मन्त्रपाठ या विधिवाक्यों के पाठ के अनुसार अनुष्ठान।
3	स्थान	किसी स्थान विशेष में पदार्थों की उपस्थिति के आधार पर।
4	मुख्य	मुख्य क्रिया का जो क्रम है, वही उसके अंगों का भी होगा।
5	प्रवृत्ति	सह-प्रयोज्य पदार्थों में जहाँ से कार्य आरम्भ किया गया हो।

महत्त्व:

मीमांसा दर्शन में इन प्रमाणों का उपयोग यज्ञीय अनुष्ठान की प्रक्रिया को निर्विवाद बनाने के लिए किया जाता है। यदि दो प्रमाणों में विरोध हो, तो पूर्व वाला (जैसे 'अर्थ') बाद वाले (जैसे 'पाठ') से अधिक बलवान माना जाता है।

Q8. जैनमतानुसारेण 'मति-ज्ञानस्य' हेतुत्वेन कः सन्निकर्षः स्वीक्रियते?

1. इन्द्रिय-मनस्-संयोगः

2. नाम-निक्षेपः

3. केवलज्ञानम्

4. सादृश्य-ज्ञानम्

Ans. (a)

Sol. परिचय: जैन दर्शन में ज्ञान के पाँच भेद माने गए हैं, जिनमें 'मति ज्ञान' सबसे पहला है। यह मति ज्ञान इन्द्रिय और मन के संयोग से उत्पन्न होता है, जो न्याय दर्शन के प्रत्यक्ष के समान है।

व्याख्या:

• जैन दर्शन में 'मति ज्ञान' को वह ज्ञान माना गया है जो इन्द्रियों (पाँचों बाहरी इन्द्रियाँ) और मन (आभ्यन्तर इन्द्रिय) के माध्यम से प्राप्त होता है।

• मति ज्ञान को ही परोक्ष या सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष ज्ञान कहा जाता है।

• मति ज्ञान की उत्पत्ति के लिए इन्द्रिय-मनस्-संयोगः (इन्द्रिय और मन का विषय से संबंध) आवश्यक है।

• यह प्रक्रिया न्याय दर्शन के लौकिक प्रत्यक्ष की प्रक्रिया के बहुत समान है, जहाँ आत्मा का मन से, मन का इन्द्रियों से, और इन्द्रियों का विषय से संबंध होना अनिवार्य है।

• अतः, जैन दर्शन में, बाह्य विषयों के ज्ञान के लिए मति ज्ञान की अनिवार्यता और उसके कारण के रूप में इन्द्रिय-मनस्-संयोग की स्वीकृति, न्याय दर्शन के सन्निकर्ष की अवधारणा से मिलती जुलती है।

रोचक तथ्य:

• (b) नाम-निक्षेपः: यह जैन तर्कशास्त्र में किसी शब्द के अर्थ को समझने के लिए प्रयोग किए जाने वाले चार 'निक्षेपों' में से एक है।

• (c) केवलज्ञानम्: यह जैन दर्शन में सबसे उच्चतम और पूर्ण ज्ञान है, जो इन्द्रियों और मन की सहायता के बिना सीधे आत्मा द्वारा प्राप्त होता है। यह मति ज्ञान का कारण नहीं है।

• (d) सादृश्य-ज्ञानम्: यह न्याय दर्शन में उपमान प्रमाण का कारण है। जैन दर्शन इसे मति ज्ञान (प्रत्यक्ष) और श्रुत ज्ञान (शब्द) में समाहित कर लेता है।

Q9. न्यायमतेन पञ्चावयव-वाक्यस्य (अनुमान-प्रक्रियायाः) प्रयोगक्रमः समीचीनः कीदृशः?

(a) हेतुः, प्रतिज्ञा, उदाहरणम्, उपनयः, निगमना।

(b) प्रतिज्ञा, हेतुः, उपनयः, उदाहरणम्, निगमना।

(c) प्रतिज्ञा, हेतुः, उदाहरणम्, उपनयः, निगमना।

(d) हेतुः, उदाहरणम्, प्रतिज्ञा, उपनयः, निगमना।

Ans. (c)

Sol. परिचय: यह प्रश्न न्याय सिद्धांत मुक्तावली (और न्याय दर्शन) के अनुसार परार्थानुमान (दूसरों को समझाने के लिए किया गया अनुमान) में प्रयुक्त पञ्चावयव-वाक्य (पाँच चरण वाले वाक्य) के निश्चित क्रम को पूछता है।

व्याख्या:

• परार्थानुमान में क्रम का बहुत महत्त्व है, क्योंकि यह तार्किक प्रस्तुति (Logical Demonstration) का सही तरीका दर्शाता है।

• विकल्प (स) प्रतिज्ञा, हेतुः, उदाहरणम्, उपनयः, निगमना ही न्याय दर्शन में स्वीकृत सही क्रम है।

• प्रतिज्ञा (Thesis): साध्य को सिद्ध करने की घोषणा ("पर्वत पर अग्नि है")।

• हेतुः (Reason): साध्य के ज्ञान का कारण ("क्योंकि पर्वत पर धुआँ है")।

• उदाहरणम् (Example/Universal Law): हेतु और साध्य के बीच व्याप्ति (अविनाभाव संबंध) का प्रदर्शन ("जहाँ धुआँ होता है, वहाँ अग्नि होती है, जैसे रसोई")।

• उपनयः (Application): हेतु का पक्ष (पर्वत) में अनुप्रयोग ("यह पर्वत भी धुआँ वाला है")।

• निगमना (Conclusion): उपर्युक्त चारों चरणों के आधार पर अंतिम निष्कर्ष ("अतः पर्वत पर अग्नि है")।

रोचक तथ्य:

• अरस्तू के सिलोजिज़्म से भिन्नता: यह पाँच अवयवों वाला न्याय-वाक्य, अरस्तू के तीन-अवयव वाले सिलोजिज़्म से भिन्न है, क्योंकि इसमें 'उदाहरण' (व्याप्ति ज्ञान) और 'उपनय' (अनुप्रयोग) दो अतिरिक्त चरण हैं जो प्रमाण की प्रक्रिया को अधिक व्यापक बनाते हैं।

• (अ), (ब), (द) में क्रम-भंग: किसी भी अनुमान की शुरुआत हमेशा प्रतिज्ञा से होती है, जो सिद्ध किए जाने वाले विषय को स्थापित करती है। अतः (अ), (ब), और (द) गलत हैं क्योंकि वे हेतु या अन्य अवयवों से प्रारंभ होते हैं।

Q10. केशवमिश्रमतेन, 'चक्षुषा घटस्य प्रत्यक्षम्' इत्यत्र कः लौकिक-सन्निकर्षः अपेक्षितः, तथा च 'घटे विद्यमानस्य रूपस्य प्रत्यक्षम्' इत्यत्र कः सन्निकर्षः अपेक्षितः?

(a) संयोगः; संयुक्त-समवायः च।

(b) संयुक्त-समवायः; समवायः च।

(c) संयोगः; समवायः च।

(d) संयुक्त-समवेत-समवायः; संयुक्त-समवायः च।

Ans. (a)

Sol. परिचय: यह प्रश्न तर्कभाषा के अनुसार लौकिक प्रत्यक्ष (Perception) के लिए आवश्यक इंद्रिय-अर्थ सन्निकर्ष (Sense-Object Contact) के भेदों और उनके क्रम को पूछता है।

व्याख्या:

• न्याय-वैशेषिक छह प्रकार के सन्निकर्ष (संबंध) मानते हैं, जिनमें से ये दोनों लौकिक प्रत्यक्ष के भेद हैं।

• विकल्प (अ) संयोगः; संयुक्त-समवायः च सही उत्तर है:

• 'चक्षुषा घटस्य प्रत्यक्षम्' (आँख से घड़े का प्रत्यक्ष): यहाँ आँख (इंद्रिय) का घड़े (अर्थ) से सीधा संयोग संबंध होता है, क्योंकि दोनों द्रव्य (Substance) हैं।

• 'घटे विद्यमानस्य रूपस्य प्रत्यक्षम्' (घड़े में विद्यमान रूप का प्रत्यक्ष): रूप (गुण) घड़े में समवाय संबंध से रहता है। जब आँख का घड़े से संयोग हुआ, तब वह घड़ा संयुक्त कहलाया। अब, उस संयुक्त घड़े में रूप का समवाय संबंध है। इसलिए सन्निकर्ष संयुक्त-समवाय हुआ।

रोचक तथ्य:

• (ब) संयुक्त-समवायः; समवायः च: समवाय सन्निकर्ष केवल 'श्रोत्रेन्द्रियेण शब्दस्य प्रत्यक्षम्' के लिए होता है, क्योंकि शब्द आकाश में समवेत होता है और श्रोत्र (कान) स्वयं आकाश ही है। यहाँ घड़े के प्रत्यक्ष में इसका प्रयोग नहीं होता।

• (स) संयोगः; समवायः च: घड़े के प्रत्यक्ष में संयोग है, पर रूप के प्रत्यक्ष में सीधा समवाय नहीं, बल्कि संयुक्त-समवाय होता है क्योंकि आँख का घड़े से सीधा संबंध है।

• (द) संयुक्त-समवेत-समवायः; संयुक्त-समवायः च: संयुक्त-समवेत-समवाय का उपयोग रूपत्व (रूप का सामान्य) के प्रत्यक्ष में होता है, न कि केवल रूप के प्रत्यक्ष में।

Q11. चित्तस्य वृत्तयः क्रमशो योज्यताम्-

(A) विकल्पः

(B) प्रमाणम्

(C) स्मृतिः

(D) निद्रा

समुचितं क्रमं चिनुत-

(a) A, B, C, D
(b) B, A, C, D
(c) C, B, D, A
(d) D, C, A, B

Ans. (b)

Sol. परिचय: यह प्रश्न चित्त की पाँच वृत्तियों को उनके मूल पाठ पतंजलि के योगसूत्र (समाधि पाद, सूत्र 1.6) के अनुसार क्रमिक रूप से व्यवस्थित करने पर आधारित है।

व्याख्या: महर्षि पतंजलि ने चित्त की पाँच वृत्तियों का उल्लेख क्रमानुसार किया है, जिनका निरोध ही योग है:

• 1. प्रमाण (B): यह चित्त की पहली वृत्ति है और सम्यक् ज्ञान का साधन है। इसके तीन प्रकार हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम (शास्त्र प्रमाण)।

• 2. विपर्यय: (विकल्प से पहले आने वाली, यद्यपि प्रश्न में अनुपस्थित) यह मिथ्या ज्ञान है जो विषय के वास्तविक स्वरूप पर आधारित नहीं होता।

• 3. विकल्प (A): यह वृत्ति शब्द-ज्ञान पर आधारित है, जहाँ वस्तु या क्रिया का अस्तित्व न होने पर भी मात्र शब्द के सामर्थ्य से ज्ञान उत्पन्न होता है (जैसे: 'पुरुष का चैतन्य')।

• 4. निद्रा से पहले स्मृति (C): स्मृति अनुभूत विषय का लोप न होने देना है; यह अतीत के अनुभवों को चेतना में वापस लाती है। प्रश्न में यह निद्रा से पहले आती है।

• 5. निद्रा (D): यह अभाव-प्रत्यय (अनुपस्थिति का ज्ञान) वाली वृत्ति है, जिसमें तमोगुण की प्रधानता के कारण ज्ञान का पूर्ण अभाव-सा हो जाता है।

रोचक तथ्य: • प्रमाण: प्रमाण ही यथार्थ ज्ञान है, जो शेष चार वृत्तियों से भिन्न है। योग की साधना में इसी का सहारा लिया जाता है।

• विकल्प की प्रकृति: विकल्प वृत्ति को प्रायः विपर्यय (मिथ्या ज्ञान) के बाद रखा जाता है। यह विपर्यय से इस बात में भिन्न है कि यह अज्ञान नहीं है, बल्कि मात्र शब्दों की शक्ति पर आधारित है।

• वृत्ति का निरोध: योग का लक्ष्य चित्त की इन सभी वृत्तियों, चाहे वे क्लिष्ट (दुःखद) हों या अक्लिष्ट (सुखद), का पूर्ण निरोध करना है।

• पाँच वृत्तियाँ: योगसूत्र में पाँचों वृत्तियों का क्रम इस प्रकार है: प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति। (यहाँ प्रश्न के विकल्पों के अनुसार क्रम थोड़ा समायोजित है)।

Q12. प्रदीपकारः कैयटः कस्य शिष्यः आसीत् ?

(a) महेश्वरस्य

(b) भर्तृहरेः

(c) जैयटस्य

(d) कात्यायनस्य

Ans. (a)

Sol. परिचय: व्याकरण शास्त्र के इतिहास में 'महाभाष्य' के सबसे प्रामाणिक व्याख्याकार के रूप में कैयट का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

व्याख्या:

• आचार्य कैयट कश्मीर के निवासी थे और उन्होंने पतंजलि कृत महाभाष्य पर 'प्रदीप' नामक सुप्रसिद्ध टीका लिखी है।

• ऐतिहासिक साक्ष्यों और व्याकरण परंपरा के अनुसार, कैयट के गुरु का नाम महेश्वर था।

• कैयट ने 'प्रदीप' के प्रारंभ में अपने गुरु महेश्वर की वन्दना की है और स्वीकार किया है कि उन्होंने अपने गुरु के उपदेशों के आधार पर ही महाभाष्य के गंभीर रहस्यों को प्रकट किया है।

• वे जैयट के पुत्र थे, परंतु शिष्य महेश्वर के थे।

कैयट और उनकी गुरु-परम्परा तालिका

विवरण	नाम
ग्रन्थकार	आचार्य कैयट
पिता का नाम	जैयट
गुरु का नाम	महेश्वर
प्रमुख कृति	महाभाष्य-प्रदीप
प्रमुख टीकाकार (प्रदीप पर)	नागेश भट्ट (उद्योत टीका)

रोचक तथ्य:

• (b) भर्तृहरेः: भर्तृहरि 'वाक्यपदीय' के रचयिता हैं। यद्यपि कैयट ने भर्तृहरि के सिद्धांतों का अनुसरण किया है, पर वे उनके साक्षात् शिष्य नहीं थे क्योंकि दोनों के काल में सदियों का अंतर है।

• (c) जैयटस्य: जैयट आचार्य कैयट के पिता थे। कुछ स्थानों पर पारिवारिक शिक्षा का उल्लेख मिलता है, परंतु शास्त्रीय गुरु के रूप में 'महेश्वर' का नाम ही प्रसिद्ध है।

• (d) कात्यायनस्य: कात्यायन 'वार्तिककार' हैं। वे पाणिनि के बाद और पतंजलि से पहले हुए थे, अतः कैयट के गुरु होना कालक्रम की दृष्टि से असंभव है।

• कैयट के विषय में यह भी प्रसिद्ध है कि उन्होंने अपनी टीका के माध्यम से लुप्तप्राय हो रहे महाभाष्य के अर्थों को पुनर्जीवित किया।

Q13. परस्परं समुचितं मेलयत -

सूची-I	सूची-II
A. काशिकाविवरणपञ्जिका	I. भट्टोजिदीक्षितः
B. वैयाकरणमतोन्मज्जनम्	।।. जिनेन्द्रबुद्धिः
C. उद्द्योतनम्	III. नागोजीभट्टः
D. स्फोटवादः	IV. अन्नम्भट्टः

अधोलिखितविकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत-

(a) A-IV, B-III, C-II, D-I
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-II, B-I, C-IV, D-III
(d) A-II, B-IV, C-III, D-I

Ans. (c)

Sol. परिचय: यह प्रश्न संस्कृत व्याकरण के कुछ प्रमुख ग्रन्थों और उनके रचयिताओं के सही मिलान पर आधारित है।

व्याख्या: सही मिलान और उनका संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है:

• A. काशिकाविवरणपञ्जिका - II. जिनेन्द्रबुद्धिः

• ग्रन्थ: 'काशिकाविवरणपञ्जिका' (जिसे 'न्यास' नाम से भी जाना जाता है) प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ 'काशिकावृत्ति' पर लिखी गई एक टीका (व्याख्या) है।

• लेखक: इसके रचयिता प्रसिद्ध बौद्ध वैयाकरण जिनेन्द्रबुद्धि हैं। यह 'काशिकावृत्ति' की सबसे महत्वपूर्ण और विस्तृत टीकाओं में से एक है।

• B. वैयाकरणमतोन्मज्जनम् - I. भट्टोजिदीक्षितः

• ग्रन्थ: 'वैयाकरणमतोन्मज्जनम्' (अर्थात् 'वैयाकरणों के मत का उद्धार') भट्टोजिदीक्षित द्वारा रचित एक लघु ग्रन्थ है।

• लेखक: इसके रचयिता भट्टोजिदीक्षित हैं, जो 'सिद्धान्तकौमुदी' जैसे महान ग्रन्थों के लिए विख्यात हैं। यह ग्रन्थ मुख्य रूप से मीमांसा और अन्य दर्शनों के आक्षेपों से व्याकरण मत की रक्षा करता है।

• C. उद्द्योतनम् - IV. अन्नम्भट्टः

• ग्रन्थ: 'उद्द्योतनम्' न्याय-वैशेषिक दर्शन के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'तर्कसंग्रह' पर लिखी गई एक टीका है। यह ग्रन्थ न्याय और तर्क के मूलभूत विषयों को स्पष्ट करता है।

• लेखक: इसके रचयिता अन्नम्भट्ट हैं, जो स्वयं 'तर्कसंग्रह' के मूल लेखक हैं और उन्होंने ही 'उद्द्योतनम्' नामक टीका लिखी है। अन्नम्भट्ट ने तर्कशास्त्र के जटिल विषयों को सरल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

• D. स्फोटवादः - III. नागोजीभट्टः

• ग्रन्थ: 'स्फोटवादः' नागोजीभट्ट द्वारा रचित एक स्वतंत्र ग्रन्थ है, जो व्याकरण दर्शन के केंद्रीय विषय 'स्फोट' सिद्धांत का विस्तृत विवेचन करता है। स्फोट वह अविभाज्य, नित्य शब्द-तत्व है जो अर्थ का प्रकाशक होता है।

• लेखक: इसके रचयिता नागोजीभट्ट (या नागेशभट्ट) हैं, जो महाभाष्य पर 'उद्द्योत' और 'परिभाषेन्दुशेखर' जैसे अन्य महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रन्थों के लिए प्रसिद्ध हैं।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में उल्लिखित विद्वानों से संबंधित ग्रन्थ:

• भट्टोजिदीक्षितः (I): 'सिद्धान्तकौमुदी', 'शब्दकौस्तुभ', 'प्रौढ़मनोरमा'।

• नागोजीभट्टः (III): 'महाभाष्यप्रदीपोद्द्योत' (या उद्द्योत), 'परिभाषेन्दुशेखर', 'लघुशब्देन्दुशेखर', 'व्याकरणसिद्धान्तमञ्जूषा'।

• अन्नम्भट्टः (IV): 'तर्कसंग्रह' (मूल ग्रन्थ), 'दीपिका' (तर्कसंग्रह पर टीका)।

Q14. एतेषु ध्रुवागानस्य भेदाः सन्ति -

1.ततम्

2.अवनद्धम्

3.आक्षेपः

4.नैष्क्रामिकी

5. प्रसादिकी

अधोलिखितेषु उत्तरं चिनुत-

(a)1,4,5 केवलम्

(b)3,4,5 केवलम्

(c)2,3,5 केवलम्

(d) 1,2,5 केवलम्

परिचय: ध्रुवगान भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार नाटक के विभिन्न प्रसंगों में रसों और भावों को पुष्ट करने के लिए गाए जाने वाले विशेष गीत हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही विकल्प **(b) 3, 4, 5 केवलम्** है। ध्रुवा के मुख्य रूप से पाँच भेद माने गए हैं, जो नाटक की विभिन्न स्थितियों को दर्शाते हैं:

• **आक्षेप (3):** जब नाटक में कोई नया पात्र प्रवेश करता है या रस में परिवर्तन होता है, तब 'आक्षेप' ध्रुवा का गायन किया जाता है।

• **नैष्क्रामिकी (4):** यह ध्रुवा पात्र के मंच से बाहर निकलते समय (निष्क्रमण) गाई जाती है।

• **प्रासादिकी (5):** इसका प्रयोग दर्शक के मन को प्रसन्न करने और पूर्ववर्ती रस को शांत कर नए रस की उत्पत्ति के लिए किया जाता है।

इसके अतिरिक्त दो अन्य भेद 'प्रावेशिकी' (प्रवेश के समय) और 'आन्तरा' (किसी बाधा या रिक्त स्थान को भरने के लिए) होते हैं।

ध्रुवा का नाम	**प्रयोग का समय**
प्रावेशिकी	पात्र के रंगमंच पर प्रवेश के समय
आक्षेप	रस या स्थिति में अचानक बदलाव के समय
प्रासादिकी	चित्त की प्रसन्नता और रस शोधन हेतु
आन्तरा	आकस्मिक त्रुटि या विच्छेद को भरने हेतु
नैष्क्रामिकी	पात्र के रंगमंच से प्रस्थान के समय

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है:

• **(a) ततम्:** यह ध्रुवा का भेद नहीं, बल्कि वाद्यों का एक प्रकार है। इसके अंतर्गत वीणा जैसे तंत्री (तार वाले) वाद्य आते हैं।

• **(b) अवनद्धम्:** यह भी वाद्य यंत्रों का एक वर्ग है। इसके अंतर्गत चर्म (चमड़े) से मढ़े हुए वाद्य जैसे मृदंग, ढोल आदि आते हैं।

Q15. 'खण्डनखण्डखाद्यस्य' रचयितुः अन्या कृतिः एतेषु का अस्ति?

(a) स्थैर्यविचारप्रकरणम्

(b) प्रमाणसमुच्चयवाद

(c) अभिधर्मकोष

(d) युक्तिमुक्तावली

परिचय: श्रीहर्ष द्वारा रचित 'खण्डनखण्डखाद्य' अद्वैत वेदांत का एक सुप्रसिद्ध ग्रंथ है जिसमें न्याय दर्शन के तर्कों का खंडन किया गया है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही विकल्प **(a) स्थैर्यविचारप्रकरणम्** है। महाकवि श्रीहर्ष न केवल एक उच्च कोटि के कवि थे, बल्कि वे एक प्रकांड दार्शनिक भी थे।

• **श्रीहर्ष की दार्शनिक कृतियाँ:** श्रीहर्ष ने 'खण्डनखण्डखाद्य' के अतिरिक्त **स्थैर्यविचारप्रकरणम्** नामक ग्रंथ की रचना की है। इसमें दार्शनिक सिद्धांतों की स्थिरता और सूक्ष्म विवेचन पर बल दिया गया है।

• **नैषधीयचरितम्:** यह उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्य कृति है जो संस्कृत साहित्य के 'वृहत्त्रयी' में गिनी जाती है। श्रीहर्ष ने स्वयं नैषधीयचरित के सर्गों के अंत में अपनी अन्य रचनाओं का उल्लेख किया है।

• **अद्वैत सिद्धि:** उनके ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य शंकर के अद्वैतवाद की स्थापना करना और तार्किक आधार पर भेदवाद का खंडन करना था।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दी गई रचनाओं का विवरण इस प्रकार है:

• **(b) प्रमाणसमुच्चय:** यह बौद्ध न्याय के जनक **आचार्य दिङ्नाग** की अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है। इसमें प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाणों का विस्तृत लक्षण दिया गया है।

• **(c) अभिधर्मकोष:** इस विश्वकोषीय ग्रंथ के रचयिता **आचार्य वसुबन्धु** हैं। यह बौद्ध दर्शन (विशेषकर सर्वास्तिवाद) के सिद्धांतों का आधारभूत ग्रंथ माना जाता है।

• **(d) युक्तिमुक्तावली:** यह एक संग्रह ग्रंथ है। इसी नाम से एक प्रसिद्ध सूक्ति संग्रह **जल्हण** द्वारा भी संकलित किया गया है, जिसमें विभिन्न कवियों की सूक्तियों का संकलन है।

श्रीहर्ष की रचनाओं की तालिका:

रचना का नाम	विधा/विषय
नैषधीयचरितम्	महाकाव्य (वृहत्त्रयी)
खण्डनखण्डखाद्य	दर्शन (अद्वैत वेदांत)
स्थैर्यविचारप्रकरणम्	दार्शनिक प्रकरण ग्रंथ
विजयप्रशस्ति	प्रशस्ति काव्य
छिन्दप्रशस्ति	प्रशस्ति काव्य

Q16. पण्डिता-क्षमाराव-विरचिता 'कथामुक्तावली' कस्मिन् वर्षे प्रकाशिता अभवत्?

(a) 1933
(b) 1890
(c) 1899
(d) 1956

परिचय: पण्डिता क्षमाराव (1890-1954) आधुनिक संस्कृत साहित्य की एक अत्यंत प्रभावशाली लेखिका और कवयित्री थीं, जिन्होंने संस्कृत में आधुनिक कथा और सामाजिक विषयों को प्रतिष्ठापित किया।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही विकल्प **(d) 1956** है।

• **कथामुक्तावली:** यह पण्डिता क्षमाराव का एक प्रसिद्ध गद्य-कथा संग्रह है जिसमें कुल **15 लघुकथाएँ** संकलित हैं।

• **प्रकाशन:** इसका प्रकाशन उनके निधन (1954) के पश्चात मरणोपरांत वर्ष **1956** (शाके 1877) में हुआ था। इसे मुम्बई के 'न. मा. त्रिपाठी' (N.M. Tripathi) पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित किया गया था।

• **विषय-वस्तु:** इस संग्रह की कहानियाँ सामाजिक समस्याओं, नारी संघर्ष और मानवीय संवेदनाओं पर आधारित हैं। इनमें 'क्षणिकविभ्रमः', 'हैमसमाधिः' और 'मायाजालम्' जैसी प्रसिद्ध कहानियाँ शामिल हैं।

रचना का नाम	विधा	प्रकाशन वर्ष
शंकरजीवनाख्यानम्	पिता की जीवनी	1939
मीरालहरी	खण्डकाव्य	1944
श्रीतुकारामचरितम्	महाकाव्य	1950
श्रीरामदासचरितम्	महाकाव्य	1953
कथामुक्तावली	कथा संग्रह	1956

रोचक तथ्य: पण्डिता क्षमाराव की अन्य कृतियों और जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं:

• **(a) 1933:** इस समय के आसपास उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति **'सत्याग्रहगीता' (1932)** लिखी थी, जो महात्मा गांधी के दर्शन से प्रभावित थी।

• **(b) 1890:** यह पण्डिता क्षमाराव का **जन्म वर्ष** है। उनका जन्म महाराष्ट्र के एक विद्वान परिवार में हुआ था।

• **(c) 1899:** इस कालखंड में उनके पिता पण्डित शंकर पाण्डुरंग का देहावसान हुआ था, जिनकी स्मृति में बाद में उन्होंने 'शंकरजीवनाख्यानम्' लिखा।

• **उपाधि:** संस्कृत साहित्य में उनके अद्वितीय योगदान के कारण पण्डित समाज ने उन्हें **'पण्डिता'** और **'साहित्यचन्द्रिका'** की उपाधियों से विभूषित किया था।

Q17. कैय्यटस्य शिष्यः कः?

(a) महेश्वरः

(b) अन्नंभट्टः

(c) व्याडि

(d) भर्तृहरि

परिचय: कैयट संस्कृत व्याकरण शास्त्र के एक अत्यंत महत्वपूर्ण आचार्य हैं, जिन्होंने आचार्य मम्मट के समय के आसपास महाभाष्य पर अपनी प्रसिद्ध टीका 'प्रदीप' की रचना की थी।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही विकल्प **(a) महेश्वरः** है।

• **गुरु-शिष्य परंपरा:** व्याकरण शास्त्र के इतिहास में प्रसिद्ध टीकाकार **महेश्वर** को **कैयट** का शिष्य माना जाता है।

• **ग्रंथ रचना:** महेश्वर ने अपने गुरु कैयट द्वारा रचित 'महाभाष्य-प्रदीप' पर **'विवादभञ्जनी'** (या प्रदीप-प्रकाश) नामक व्याख्या ग्रंथ की रचना की है। इस ग्रंथ में उन्होंने कैयट के सूक्ष्म दार्शनिक और व्याकरणिक मतों को और अधिक स्पष्ट किया है।

• **समय:** कैयट का समय 11वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में माना जाता है, अतः उनके शिष्य महेश्वर का समय भी इसी के निकटवर्ती है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों के आचार्यों का विवरण इस प्रकार है:

• **(b) अन्नंभट्ट:** ये न्याय-वैशेषिक दर्शन के सुप्रसिद्ध ग्रंथ **'तर्कसंग्रह'** के रचयिता हैं। यद्यपि इन्होंने व्याकरण पर 'पाणिनीय-मितक्षरा' लिखी है, परंतु ये कैयट के शिष्य नहीं हैं।

• **(c) व्याडि:** ये पाणिनी के पूर्ववर्ती या समकालीन विद्वान माने जाते हैं। इन्होंने **'संग्रह'** नामक एक विशाल व्याकरण ग्रंथ लिखा था, जो अब अप्राप्य है। ये कैयट से सदियों पहले हुए थे।

• **(d) भर्तृहरि:** ये 'वाक्यपदीय' के रचयिता और व्याकरण दर्शन (शब्दब्रह्म) के प्रधान आचार्य हैं। इनका समय 5वीं शताब्दी है, जो कैयट (11वीं शताब्दी) से बहुत पहले का है।

Q18. षड्भावविकारान् अवरोहक्रमेण व्यवस्थापयन्तु-

1. विनश्यति

2. विपरिणमते

3. जायते

4. अपक्षीयते

5. वर्धते

सम्यक उत्तरम् चिनुत-

(a) 3,4,5,4,1
(b) 5,4,3,2,1
(c) 3,2,5,4,1
(d) 1,2,3,4,5

परिचय: निरुक्तकार आचार्य यास्क ने 'भाव' (सत्त्व या वस्तु) की अवस्थाओं को दर्शाने के लिए छह प्रकार के परिवर्तनों का वर्णन किया है, जिन्हें 'षड्भावविकार' कहा जाता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) 3, 2, 5, 4, 1** है। आचार्य यास्क ने 'वष्यार्यणि' के मत को उद्धृत करते हुए इन विकारों का एक निश्चित क्रम बताया है। यद्यपि प्रश्न में 'अवरोहक्रम' (Descending order) शब्द का प्रयोग हुआ है, किंतु विकल्पों की संरचना यास्क द्वारा बताए गए स्वाभाविक विकास क्रम (आरोह क्रम) के अनुसार ही है:

1. **जायते (3):** वस्तु का उत्पन्न होना (प्रथम विकार)।
2. **अस्ति (विकल्प में नहीं):** सत्ता का बोध होना।
3. **विपरिणमते (2):** वस्तु में आंतरिक रूपांतरण होना।
4. **वर्धते (5):** अंगों या अवयवों का बढ़ना (वृद्धि)।
5. **अपक्षीयते (4):** क्षय होना या घटना।
6. **विनश्यति (1):** पूर्णतः नष्ट हो जाना (अंतिम विकार)।

रोचक तथ्य: षड्भावविकार से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी निम्नलिखित तालिका में दी गई है:

क्रम	भाव विकार	अर्थ	अवस्था
1	**जायते**	जन्म लेना	उत्पत्ति
2	**अस्ति**	अस्तित्व	विद्यमानता
3	**विपरिणमते**	परिवर्तन	रूपांतरण
4	**वर्धते**	बढ़ना	विकास
5	**अपक्षीयते**	घटना	ह्रास
6	**विनश्यति**	नष्ट होना	विनाश

(a), (b), (d) विकल्प: ये विकल्प तर्कसंगत नहीं हैं क्योंकि इनमें विकास के क्रम को असंबद्ध तरीके से रखा गया है।

• **निरुक्त:** यह ग्रंथ वेदों के अर्थों को समझने के लिए 'व्युत्पत्ति' (Etymology) का शास्त्र है। यास्क ने इसमें स्पष्ट किया है कि संसार की प्रत्येक वस्तु इन छह अवस्थाओं से होकर गुजरती है।

• **दार्शनिक आधार:** ये विकार सांख्य दर्शन के 'सत्कार्यवाद' और व्याकरण के 'क्रिया' सिद्धांत को समझने में भी सहायक होते हैं।

Q19. चित्तभूमीः आरोहक्रमेण व्यवस्थापयन्तु।

1. मूढ़
2. विक्षिप्त
3. क्षिप्त
4. एकाग्र
5. निरुद्ध

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 3,4,5,4,1
(b) 5,4,3,2,1
(c) 3,1,2,4,5
(d) 1,2,3,4,5

परिचय: महर्षि पतंजलि के योगसूत्र पर व्यास भाष्य के अनुसार, चित्त की विभिन्न अवस्थाओं को 'चित्तभूमि' कहा जाता है, जो साधक की मानसिक स्थिति को दर्शाती हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) 3, 1, 2, 4, 5** है। चित्त की ये पाँच भूमियाँ सत्त्व, रज और तम गुणों की प्रधानता के आधार पर आरोहक्रम (निम्न से उच्च की ओर) में इस प्रकार हैं:

1. **क्षिप्त (3):** यह सबसे निम्न अवस्था है जहाँ रजोगुण की प्रधानता के कारण चित्त अत्यंत चंचल रहता है और सांसारिक विषयों में भटकता है।

2. **मूढ़ (1):** इसमें तमोगुण की प्रधानता होती है, जिससे चित्त में निद्रा, आलस्य और अविवेक बना रहता है।

3. **विक्षिप्त (2):** इसमें सत्त्वगुण की प्रधानता तो होती है, लेकिन कभी-कभी रजोगुण के प्रभाव से चित्त पुनः चंचल हो जाता है (अस्थिर एकाग्रता)।

4. **एकाग्र (4):** यहाँ सत्त्वगुण का पूर्ण प्रभाव होता है, जिससे चित्त किसी एक ही विषय पर स्थिर हो जाता है (संप्रज्ञात योग)।

5. **निरुद्ध (5):** यह सर्वोच्च अवस्था है जहाँ सभी वृत्तियों का निरोध हो जाता है और केवल संस्कार शेष रहते हैं (असंप्रज्ञात योग)।

रोचक तथ्य: चित्तभूमियों के वर्गीकरण और उनके गुणों का विवरण निम्नलिखित तालिका में स्पष्ट है:

क्रम	चित्तभूमि	प्रधान गुण	योग की स्थिति
1	**क्षिप्त**	रजोगुण	योग के अयोग्य
2	**मूढ़**	तमोगुण	योग के अयोग्य
3	**विक्षिप्त**	सत्त्व (गौण रज)	योग का आरम्भ
4	**एकाग्र**	शुद्ध सत्त्व	संप्रज्ञात समाधि
5	**निरुद्ध**	गुणातीत	असंप्रज्ञात समाधि

• **योग की परिभाषा:** चित्त की अंतिम दो भूमियों (एकाग्र और निरुद्ध) को ही वास्तविक 'योग' की श्रेणी में रखा जाता है।

• **त्रिविध गुण:** सांख्य और योग दर्शन के अनुसार चित्त त्रिगुणात्मक है, इसलिए गुणों के घटने-बढ़ने से ये अवस्थाएँ बदलती रहती हैं।

• **(a), (b) और (d) विकल्प:** ये विकल्प तार्किक रूप से गलत हैं क्योंकि इनमें चंचलता (क्षिप्त) और जड़ता (मूढ़) के क्रम को सही प्रकार से नहीं दर्शाया गया है।

Q20. एतेषु महाभारत-आधारितानि श्रव्यकाव्यानि सन्ति-

1. किरातार्जुनीयम्

2. कर्णभारम्

3. शिशुपालवधम्

4. बालभारतम्

5. पंचरात्रम्

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 1 एवं 3 केवलम्

(b) 1,2 एवं 4 केवलम्

(c) 3,4 एवं 5 केवलम्

(d) 2 एवं 5 केवलम्

परिचय: संस्कृत साहित्य में उपजीव्य काव्य के रूप में महाभारत का स्थान सर्वोपरि है, जिसके कथानक को आधार बनाकर अनेक श्रव्य और दृश्य काव्यों की रचना की गई है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(a) 1 एवं 3 केवलम्** है। संस्कृत साहित्य में काव्यों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है: **श्रव्य काव्य** (जिसे केवल सुना या पढ़ा जाए) और **दृश्य काव्य** (नाटक जिसे रंगमंच पर देखा जा सके)।

• **किरातार्जुनीयम् (1):** यह महाकवि भारवि द्वारा रचित 18 सर्गों का महाकाव्य है। इसका कथानक महाभारत के **वनपर्व** से लिया गया है। यह एक 'श्रव्य काव्य' है।

• **शिशुपालवधम् (3):** यह महाकवि माघ द्वारा रचित 20 सर्गों का महाकाव्य है। इसका कथानक महाभारत के **सभापर्व** से उद्धृत है। यह भी एक 'श्रव्य काव्य' है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दिए गए ग्रंथ 'दृश्य काव्य' (रूपक) की श्रेणी में आते हैं, इसलिए वे उत्तर में सम्मिलित नहीं हैं:

• **(2) कर्णभारम्:** यह महाकवि **भास** द्वारा रचित एक एकांकी नाटक (व्यायोग) है। यद्यपि यह महाभारत पर आधारित है, किंतु यह 'दृश्य काव्य' है।

• **(4) बालभारतम्:** यह **राजशेखर** द्वारा रचित नाटक (प्रचण्डपाण्डव) है। इसे दृश्य काव्य माना जाता है।

• **(5) पंचरात्रम्:** यह भी महाकवि **भास** रचित तीन अंकों का नाटक (समवकार) है।

महाभारत पर आधारित प्रमुख श्रव्य काव्यों की तालिका:

ग्रंथ का नाम	रचयिता	विधा	महाभारत का पर्व
किरातार्जुनीयम्	भारवि	महाकाव्य	वनपर्व
शिशुपालवधम्	माघ	महाकाव्य	सभापर्व
नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	महाकाव्य	वनपर्व (नलोपाख्यान)
भारतचम्पू	अनन्त भट्ट	चम्पू काव्य	सम्पूर्ण महाभारत

Q21. एतेषु चित्तवृत्तय: सन्ति-

1.प्रमाण

2. विक्षिप्त

3. विकल्प

4. स्मृति

5. एकाग्र

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 1 एवं 3 केवलम्

(b) 1,3 एवं 4 केवलम्

(c) 3,4 एवं 5 केवलम्

(d) 2 एवं 5 केवलम्

परिचय: महर्षि पतंजलि के योगसूत्र के अनुसार, चित्त के दर्पण पर उभरने वाले विभिन्न विचारों, ज्ञान और मानसिक व्यापारों को 'चित्तवृत्ति' कहा जाता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) 1, 3 एवं 4 केवलम्** है। योगदर्शन के प्रथम अध्याय (समाधिपाद) के पाँचवें सूत्र 'वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः' में पाँच प्रकार की चित्तवृत्तियों का वर्णन है:

• **प्रमाण (1):** यथार्थ ज्ञान को प्रमाण कहते हैं। इसके तीन भेद हैं— प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम।

• **विकल्प (3):** शब्द से उत्पन्न होने वाला वह ज्ञान जिसका कोई वास्तविक वस्तुगत आधार न हो (जैसे— 'बन्ध्या पुत्र' या 'आकाश कुसुम')।

• **स्मृति (4):** अनुभव किए गए विषयों का चित्त से ओझल न होना, अर्थात् पूर्व अनुभव को पुनः स्मरण करना।

इसके अतिरिक्त दो अन्य वृत्तियाँ **विपर्यय** (मिथ्या ज्ञान) और **निद्रा** (अभाव का ज्ञान) होती हैं।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दिए गए शब्द चित्तवृत्ति नहीं, बल्कि 'चित्तभूमि' से संबंधित हैं:

• **(2) विक्षिप्त:** यह चित्त की एक अवस्था (भूमि) है, जिसमें सत्त्वगुण की प्रधानता होती है पर चंचलता भी बनी रहती है।

• **(5) एकाग्र:** यह योग की उच्च अवस्था वाली चित्तभूमि है, जहाँ चित्त एक ही ध्येय विषय पर स्थिर हो जाता है।

चित्तवृत्ति एवं चित्तभूमि में अंतर:

श्रेणी	**प्रकार/अवस्थाएँ**	**मुख्य कार्य**
चित्तवृत्ति	प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति	ज्ञान और अज्ञान का व्यापार
चित्तभूमि	क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध	चित्त की स्थिरता का स्तर

विशेष: योग का मुख्य उद्देश्य इन्हीं पाँच चित्तवृत्तियों का निरोध (रोकना) करना है, जैसा कि प्रसिद्ध सूत्र है— **'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'**।

Q22. उत्तररामचरिते 'मुरला' नाम पात्रम् अस्ति-

(a) एका नदी

(b) एका वनदेवी

(c) नायिका

(d) एका परिचारिका

परिचय: भवभूति विरचित 'उत्तररामचरितम्' नाटक के तृतीय अंक (छाया अंक) में मुरला और तमसा नामक दो पात्रों का प्रयोग किया गया है, जो कथानक को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(a) एका नदी** है।

• **नदी पात्र:** संस्कृत नाटकों की यह विशेषता रही है कि यहाँ जड़ पदार्थों या प्राकृतिक आपदाओं का मानवीकरण किया जाता है। 'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अंक के प्रारंभ में **मुरला** और **तमसा** नामक दो नदियाँ मानवीय रूप में रंगमंच पर आकर परस्पर संवाद करती हैं।

• **विष्कंभक की भूमिका:** मुरला और तमसा का यह संवाद 'शुद्ध विष्कंभक' का उदाहरण है। इनके माध्यम से ही दर्शकों को यह सूचना मिलती है कि सीता का परित्याग कर दिया गया है और वे अब पाताल लोक में निवास कर रही हैं।

• **सीता की सुरक्षा:** मुरला ही वह पात्र है जो यह बताती है कि लोपामुद्रा (अगस्त्य की पत्नी) ने गोदावरी नदी को सीता की देखभाल करने का संदेश भेजा है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है:

• **(b) एका वनदेवी:** उत्तररामचरितम् में **'वासन्ती'** नामक पात्र एक वनदेवी है, जो सीता की सखी है और पंचवटी में निवास करती है।

• **(c) नायिका:** इस नाटक की मुख्य नायिका **सीता** हैं।

• **(d) एका परिचारिका:** नाटक में अनेक परिचारिकाएँ हो सकती हैं, किंतु मुरला का स्थान एक विशिष्ट नदी-पात्र के रूप में सुरक्षित है।

तृतीय अंक के प्रमुख पात्रों का विवरण:

पात्र का नाम	स्वरूप/प्रकृति	मुख्य कार्य
मुरला	नदी (अधिष्ठात्री देवी)	लोपामुद्रा का संदेश पहुँचाना
तमसा	नदी (अधिष्ठात्री देवी)	सीता के साथ छाया रूप में रहना
वासन्ती	वनदेवी	राम को उलाहना देना (पंचवटी की सखी)
सीता	मानवी (छाया रूप)	राम की अवस्था को अदृश्य होकर देखना

Q23. रामायणाश्रिता उत्तरकालिका रचना **'कुन्दमाला'** कस्याः विधायाः रचना अस्ति?

(a) महाकाव्यम्

(b) नाटकम्

(c) गद्यकाव्यम्

(d) चम्पूकाव्यम्

Q25. परस्परं समुचितं मेलयत –

LIST I	LIST II
A. अर्थान् चिन्तयेत	I. वृकवत्
B. पराक्रमेण	II. बकवत्
C. अवलुम्पेत	III. शशवत्
D. विनिष्पतेत	IV. सिंहवत्

दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(a) A-II, B-I, C-IV, D-III
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A- II, B-IV, C-I, D-III
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

परिचय: यह श्लोक मनुस्मृति के सातवें अध्याय (राजधर्म) में वर्णित है, जिसमें राजा को विभिन्न पशुओं के गुणों को अपनाने की शिक्षा दी गई है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) A-II, B-IV, C-I, D-III** है। आचार्य मनु और भीष्म के अनुसार एक कुशल राजा को अपनी रणनीति में पशुओं के विशिष्ट स्वभाव का अनुकरण करना चाहिए:

• **अर्थान् चिन्तयेत - बकवत् (A-II):** जिस प्रकार बगुला एक पैर पर खड़े होकर पूरी एकाग्रता के साथ मछली पकड़ने का ध्यान करता है, उसी प्रकार राजा को अपने अर्थ (धन और साध्य) की प्राप्ति के लिए पूर्ण सावधानी से चिंतन करना चाहिए।

• **पराक्रमेण - सिंहवत् (B-IV):** राजा को अपने शत्रुओं पर प्रहार करते समय सिंह के समान पराक्रम दिखाना चाहिए, जिससे उसकी विजय सुनिश्चित हो।

• **अवलुम्पेत - वृकवत् (C-I):** भेड़िये (वृक) की तरह राजा को अपने शिकार या शत्रु पर अचानक और घातक आक्रमण करने की कला आनी चाहिए।

• **विनिष्पतेत - शशवत् (D-III):** जब विपत्ति आए या घेर लिया जाए, तो खरगोश (शश) की तरह फुर्ती से बचकर निकल जाना चाहिए।

उचित मिलान तालिका:

सूची I (कार्य)	सूची II (पशु का स्वभाव)	अर्थ/महत्व
अर्थान् चिन्तयेत	**बकवत् (बगुले की तरह)**	एकाग्रता और धैर्य
पराक्रमेण	**सिंहवत् (शेर की तरह)**	अदम्य शक्ति और साहस
अवलुम्पेत	**वृकवत् (भेड़िये की तरह)**	झपट्टा मारना या शत्रु का हनन
विनिष्पतेत	**शशवत् (खरगोश की तरह)**	बचाव और पलायन की गति

रोचक तथ्य:

(a), (b) और (d) विकल्प: ये विकल्प गलत हैं क्योंकि इनमें पशुओं के गुणों को उनके विशिष्ट कार्यों के साथ सही ढंग से नहीं जोड़ा गया है।

चाणक्य नीति: इसी तरह के उपदेश आचार्य चाणक्य ने भी दिए हैं, जिसमें उन्होंने सिंह से एक, बगुले से एक, मुर्गे से चार और कौवे से पाँच गुण सीखने की बात कही है।

Q24. परस्परं समुचितं मेलयत –

LIST I	LIST II
A. नर्तकी	I. ङीन्
B. गार्गी	II. ति
C. युवति	III. ङीप्
D. ब्राह्मणी	IV. ङीष्

दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(a) A-I, B-IV, C-II, D-III
(b) A-III, B-I, C-II, D-IV
(c) A- III, B-IV, C-II, D-I
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

परिचय: संस्कृत व्याकरण के 'स्त्रीप्रत्यय' प्रकरण में पुल्लिंग शब्दों से स्त्रीलिंग बनाने हेतु विशिष्ट सूत्रों द्वारा ङीप्, ङीष्, ङीन् और ति प्रत्ययों का विधान किया गया है।

व्याख्या:

सही मिलान और उनके सूत्रों की तालिका निम्नलिखित है:

सूची I (शब्द)	सूची II (प्रत्यय)	सूत्र (Sutra)	व्याख्या
A. नर्तकी	**IV. ङीष्**	**'शिल्पिनि च'**	यह 'गौरादिभ्यश्च' सूत्र के अंतर्गत आने वाला वार्त्तिक है। शिल्प (नृत्य कला) अर्थ होने के कारण 'नर्तक' से **ङीष्** होता है।
B. गार्गी	**III. ङीप्**	**'यञश्च'**	'गर्ग' शब्द से 'यञ्' प्रत्यय लगकर 'गार्ग्य' बनता है। 'यञ्' अन्त्य होने के कारण स्त्रीलिंग में **ङीप्** प्रत्यय लगता है।

सूची I (शब्द)	सूची II (प्रत्यय)	सूत्र (Sutra)	व्याख्या
C. युवति	**II. ति**	**'यू॒नस्ति'**	यह एक विशिष्ट सूत्र है जो केवल 'युवन्' शब्द से स्त्रीलिंग बनाने के लिए **ति** प्रत्यय का विधान करता है।
D. ब्राह्मणी	**I. ङीन्**	**'शाङ्गरवाद्यो ङीन्'**	'ब्राह्मण' शब्द 'शाङ्गरवादि' गण में पठित है, अतः इस सूत्र से यहाँ **ङीन्** प्रत्यय होता है।

रोचक तथ्य:

• **(a) ङीन्:** 'शाङ्गरवाद्यो ङीन्' सूत्र से मुख्य रूप से जातिवाचक शब्दों (जैसे- ब्राह्मणी) और 'नृ' शब्द (नारी) में इसका प्रयोग होता है।

• **(b) ति:** 'यू॒नस्ति' सूत्र के कारण 'युवति' शब्द बनता है। लौकिक प्रयोग में 'युवती' (ङीष् के साथ) भी मिलता है, किंतु वैदिक और शुद्ध व्याकरणिक रूप 'युवति' ही है।

• **(c) ङीष्:** जहाँ शब्द 'ष' इत्संज्ञक हो (जैसे- नर्तक, जहाँ नृत् + वुन् होता है और 'ष' की इत्संज्ञा की कल्पना की जाती है), वहाँ **ङीष्** लगता है।

• **(d) ङीप्:** 'यञश्च' सूत्र से 'गार्ग्य' के 'य' का लोप होकर 'गार्गी' रूप सिद्ध होता है। यह प्रत्यय ऋकारान्त और नकारान्त शब्दों में भी प्रचुरता से प्रयोग होता है।

इस प्रकार, सूत्रों के आधार पर विकल्प **(d) A-IV, B-III, C-II, D-I** पूर्णतः शुद्ध है।

Q25. स्फोटवादस्य रचनाकारः कः?

(a) नागेशः

(b) भट्टोजि दीक्षितः

(c) जैनेन्द्रः

(d) वरदराज

परिचय: व्याकरण शास्त्र में 'स्फोट' वह नित्य और अखंड तत्व है जिससे अर्थ की अभिव्यक्ति होती है, और इस सिद्धांत के प्रतिपादन हेतु 'स्फोटवाद' नामक ग्रंथ की रचना की गई।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(a) नागेशः** है। व्याकरण दर्शन के अंतिम महान आचार्य नागेश भट्ट (18वीं शताब्दी) ने स्फोट के सिद्धांत को तार्किक परिपक्वता प्रदान की।

• **ग्रंथ परिचय:** नागेश भट्ट ने **'स्फोटवाद'** नामक स्वतंत्र ग्रंथ लिखकर स्फोट के आठ भेदों का सविस्तार वर्णन किया है।

• **दार्शनिक आधार:** इस ग्रंथ में उन्होंने सिद्ध किया है कि वर्णों के समूह (ध्वनि) से अर्थ नहीं निकलता, बल्कि बुद्धि में स्थित 'स्फोट' नामक अखंड शब्द तत्व से अर्थ का बोध होता है।

• **अन्य व्याकरण ग्रंथ:** नागेश भट्ट ने 'वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा' और 'परमलघुमञ्जूषा' में भी स्फोट के दार्शनिक स्वरूप की व्याख्या की है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों के आचार्यों की प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं:

• **(b) भट्टोजि दीक्षित:** ये नागेश भट्ट के गुरु-परंपरा में आते हैं। इन्होंने **'सिद्धान्तकौमुदी'** और **'शब्दकौस्तुभ'** की रचना की है। इन्होंने 'शब्दकौस्तुभ' में स्फोट का विवेचन किया है, किंतु 'स्फोटवाद' शीर्षक ग्रंथ नागेश का है।

• **(c) जैनेन्द्र:** जैनेन्द्र व्याकरण के प्रवर्तक **आचार्य देवनन्दी** हैं। इन्होंने पाणिनीय व्याकरण से भिन्न 'जैनेन्द्र व्याकरण' की रचना की।

• **(d) वरदराज:** ये भट्टोजि दीक्षित के शिष्य थे। इन्होंने छात्रों के लिए **'लघुसिद्धान्तकौमुदी'**, 'मध्यसिद्धान्तकौमुदी' और 'सारसिद्धान्तकौमुदी' जैसे अत्यंत लोकप्रिय व्याकरण ग्रंथों की रचना की।

स्फोट के आठ भेदों की तालिका:

श्रेणी	**भेद**	**विवरण**
व्यक्ति स्फोट	वर्ण, पद, वाक्य	बाह्य अभिव्यक्ति के आधार पर
जाति स्फोट	वर्ण-जाति, पद-जाति, वाक्य-जाति	सामान्य धर्म के आधार पर
अखण्ड स्फोट	अखण्डपद, अखण्डवाक्य	अर्थबोध का वास्तविक कारण

विशेष: स्फोट सिद्धांत की नींव आचार्य **भर्तृहरि** ने अपने ग्रंथ 'वाक्यपदीयम्' में रखी थी, जिसे नागेश भट्ट ने अपने 'स्फोटवाद' ग्रंथ में चरम सीमा पर पहुँचाया।

Q26. विकुर्वणात् आकाशात् कीदृशो वायुर्जायते?

(a) शीतोष्ण:

(b) ऊष्ण:

(c) गंधयुक्तम्

(d) शीतः

Q27. मनुस्मृत्यनुसारं क्रमेण व्यवस्थापयन्तु-

1.पायु

2. हस्तौ

3. उपस्थ

4. वाक्

5. पादौ

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 4,2,5,1,3
(b) 5,1,3,2,3
(c) 1,3,2,4,5
(d)1,3,2,5,4

परिचय: मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय में महर्षि मनु ने मानव शरीर की दसों इन्द्रियों (पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ) का क्रमिक वर्णन किया है।

व्याख्या: मनुस्मृति के श्लोक संख्या 90 (द्वितीय अध्याय) के अनुसार, कर्मेन्द्रियों का सही क्रम निम्नलिखित है:

श्रोत्रं त्वक् चक्षुषी जिह्वा नासिका चैव पञ्चमी।

पायूपस्थं हस्तपादं वाक् चैव दशमी स्मृता॥ २.९० ॥

1. **पायु (मलद्वार):** श्लोक "पायूपस्थं..." से शुरू होता है, जिसमें 'पायु' को छठा (पहली कर्मेन्द्रिय) स्थान दिया गया है।
2. **उपस्थ (जननेन्द्रिय):** यह सातवें क्रम पर आने वाली दूसरी कर्मेन्द्रिय है।
3. **हस्तौ (हाथ):** श्लोक के अनुसार यह तीसरी कर्मेन्द्रिय है।
4. **पादौ (पैर):** यह चौथी कर्मेन्द्रिय है।
5. **वाक् (वाणी):** श्लोक के अंत में इसे 'दशमी' (दसवीं इन्द्रिय) कहा गया है, जो पाँचवीं कर्मेन्द्रिय है।

अतः श्लोक के क्रमानुसार सही विकल्प **1, 3, 2, 5, 4** होगा (पायु, उपस्थ, हस्त, पाद, वाक्)।

इन्द्रिय क्रम तालिका:

इन्द्रिय श्रेणी	क्रम	नाम
ज्ञानेन्द्रियाँ	1-5	श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, नासिका
कर्मेन्द्रियाँ	6	पायु (मल विसर्जन)
	7	उपस्थ (प्रजनन/आनन्द)
	8	हस्त (शिल्प/कार्य)
	9	पाद (गति/गमन)
	10	वाक् (भाषण/वाणी)

रोचक तथ्य:

- **(a) ज्ञानेन्द्रियाँ:** मनु ने इन्हें 'बुद्धीन्द्रिय' कहा है क्योंकि ये ज्ञान प्राप्ति का साधन हैं।
- **(b) मन (एकादश इन्द्रिय):** श्लोक 92 में मनु ने मन को 'एकादशं' कहा है, जो अपनी प्रकृति से उभयात्मक (ज्ञान और कर्म दोनों) है।
- **(c) इन्द्रिय जय:** मनु का मत है कि इन्द्रियों के उपभोग से कामना शांत नहीं होती, बल्कि घी डालने से अग्नि की तरह और बढ़ती है, इसलिए इनका नियमन आवश्यक है।

Q28. योगरूढा संहिता इत्यस्य तात्पर्यार्थ: क:?

(a) पदपाठ

(b) क्रमपाठ

(c) अखंडमंत्रस्य

(d) दंडपाठ

परिचय: वैदिक वाङ्मय में मंत्रों के सस्वर पाठ और उनके अक्षुण्ण स्वरूप को सुरक्षित रखने के लिए 'संहिता' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसे 'योगरूढा संहिता' भी कहा जाता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) अखंडमंत्रस्य** है।

• **संहिता का अर्थ:** आचार्य पाणिनि के अनुसार "परः सन्निकर्षः संहिता" अर्थात् वर्णों की अत्यंत निकटता संहिता है। वेदों के संदर्भ में, जब मंत्रों को बिना पद-विच्छेद किए, उनके स्वाभाविक प्रवाह और संधि-नियमों के साथ पढ़ा जाता है, तो उसे 'संहिता पाठ' या 'अखंड मंत्र' कहा जाता है।

• **योगरूढ़ शब्द:** 'योगरूढ़' वह शब्द होता है जो व्युत्पत्ति (योग) और परंपरा (रूढ़ि) दोनों अर्थों को समाहित करता है। संहिता पाठ में मंत्र का स्वरूप अखंड होता है, जहाँ पदों की संधियाँ आपस में जुड़ी रहती हैं।

• **महत्व:** अखंड मंत्र का पाठ ही वेदों का मूल स्वरूप है। इसी से अन्य विकृति पाठों (जैसे पद, क्रम आदि) का निर्माण होता है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दी गई शब्दावली वेदों के 'प्रकृति' और 'विकृति' पाठों से संबंधित है:

• **(a) पदपाठ:** यह संहिता पाठ का प्रथम प्रकृति पाठ है। इसमें संहिता के अखंड मंत्रों को पदों (शब्दों) में तोड़कर पढ़ा जाता है, ताकि व्याकरणिक स्वरूप स्पष्ट हो सके।

• **(b) क्रमपाठ:** इसमें दो-दो पदों को जोड़कर पढ़ा जाता है (जैसे- 1-2, 2-3, 3-4)। इसे द्वितीय प्रकृति पाठ माना जाता है।

• **(d) दंडपाठ:** यह वेदों के आठ 'विकृति पाठों' में से एक है। जटिल मंत्रों को याद रखने के लिए जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दंड, रथ और घन—ये आठ प्रकार के पाठ विकसित किए गए थे।

वैदिक पाठों का वर्गीकरण तालिका:

पाठ की श्रेणी	**प्रकार**	**स्वरूप**
मूल पाठ	**संहिता (अखंड)**	मंत्रों का मूल एवं अखंड स्वरूप
प्रकृति पाठ	पद, क्रम	पदों का विश्लेषण और क्रमबद्धता
विकृति पाठ	जटा, माला, **दंड**, घन आदि	स्मरण शक्ति हेतु आठ जटिल प्रकार

विशेष: मंत्रों के मूल स्वरूप (अखंडता) को बनाए रखना ही 'योगरूढा संहिता' का मुख्य प्रयोजन है ताकि वेदों की पवित्रता और स्वर प्रक्रिया में कोई विकार न आए।

Q29. जैननये पुद्गल: अस्ति-

(a) स्पर्शगंधवर्णवन्तः

(b) स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः

(c) रसगंधरूपवन्तः

(d) स्पर्शरसगन्धरूपवर्णवन्तः पुद्गलाः

परिचय: जैन दर्शन के अनुसार 'अजीव' तत्त्व के पाँच भेदों में से 'पुद्गल' वह भौतिक द्रव्य है जो संयोग (पूरण) और विभाग (गलन) की प्रक्रिया द्वारा निर्मित होता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः** है। आचार्य उमास्वामी ने 'तत्त्वार्थसूत्र' में पुद्गल के लक्षणों का स्पष्ट विवेचन किया है:

• **पुद्गल का लक्षण:** सूत्र है— *"स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः"* (तत्त्वार्थसूत्र 5.23)। इसका अर्थ है कि पुद्गल वह द्रव्य है जिसमें स्पर्श (Touch), रस (Taste), गंध (Smell) और वर्ण (Color) —ये चार गुण अनिवार्य रूप से पाए जाते हैं।

• **इन्द्रिय ग्राह्यता:** पुद्गल ही वह द्रव्य है जिसे हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष कर सकते हैं। संसार की समस्त दृश्य और भौतिक वस्तुएं पुद्गल का ही रूपांतरण हैं।

• **अणु और स्कन्ध:** पुद्गल के दो मुख्य रूप होते हैं— **अणु** (परमाणु, जो अविभाज्य है) और **स्कन्ध** (परमाणुओं का समूह या संघात)।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में गुणों का अधूरा या अशुद्ध मिश्रण है:

• **(a), (c) और (d):** ये विकल्प तकनीकी रूप से त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि जैन दर्शन में पुद्गल के लिए चार गुणों (स्पर्श, रस, गंध, वर्ण) का समूह होना आवश्यक माना गया है। विकल्प (d) में 'रूप' शब्द का अतिरिक्त प्रयोग हुआ है, जबकि जैन दर्शन में 'वर्ण' ही दृश्यता का प्रतिनिधित्व करता है।

• **पूरण-गलन:** 'पुद्गल' शब्द दो शब्दों से बना है— 'पुद्' (पूरण/इकट्ठा होना) और 'गल' (गलन/बिखरना)।

• **पुद्गल के भेद:** यह मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है— सूक्ष्म और बादर (स्थूल)। हमारे शरीर, मन, वाणी और श्वास भी जैन मतानुसार पुद्गल के ही परिणाम हैं।

Q30. 'सर्वः स्वार्थं समीहते' इति पङ्क्तिः केन रचिता अस्ति?

(a) भारविणा

(b) माघेन

(c) कालिदासेन

(d) भासेन

परिचय: यह सूक्ति महाकवि माघ विरचित **'शिशुपालवधम्'** के **तृतीय सर्ग** से उद्धृत है, जो व्यावहारिक नीति और कूटनीति के यथार्थ को प्रकट करती है।

व्याख्या:

यह श्लोक महाकवि **माघ** द्वारा रचित **'शिशुपालवधम्'** के **द्वितीय सर्ग** का **65वाँ श्लोक** है। मूल पंक्ति-

यजतां पाण्डवः स्वर्गमवत्विन्द्रस्तपस्विनः ।

वयं हनाम द्विषतः सर्वः स्वार्थं प्रतीहते ।।

इस श्लोक के माध्यम से राजनीति के उस यथार्थ को दर्शाया गया है जहाँ लोक-कल्याण के पीछे भी कहीं न कहीं प्रयोजन (स्वार्थ) छिपा होता है।

परिचय: यह श्लोक **शिशुपालवधम्** के द्वितीय सर्ग से उद्धृत है, जिसमें नीतिज्ञ **उद्धव** भगवान श्रीकृष्ण को राजनीति में 'स्वार्थ' या 'प्रयोजन' की अपरिहार्यता समझा रहे हैं।

व्याख्या:

श्लोक की व्याख्या निम्नलिखित बिंदुओं में निहित है:

• **यजतां पाण्डवः स्वर्गमवत्विन्द्रस्तपस्विनः:** उद्धव कहते हैं कि पाण्डव (युधिष्ठिर) राजसूय यज्ञ कर रहे हैं ताकि उन्हें स्वर्ग/कीर्ति प्राप्त हो, और इन्द्र तपस्वियों की रक्षा कर रहे हैं ताकि उनका अपना शासन (स्वर्ग) सुरक्षित रहे।

• **वयं हनाम द्विषतः:** इसी प्रकार हम (श्रीकृष्ण और यादव) अपने शत्रुओं (शिशुपाल आदि) का वध करना चाहते हैं ताकि हमारा राज्य निष्कंटक हो सके।

• **सर्वः स्वार्थं प्रतीहते (समीहते):** श्लोक का निष्कर्ष है कि चाहे वह राजा हो, देवता हो या साधारण मनुष्य—हर कोई अपने ही स्वार्थ (प्रयोजन) की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है।

• **राजनीतिक कूटनीति:** यहाँ 'स्वार्थ' शब्द का अर्थ संकीर्ण स्वार्थ नहीं, बल्कि 'स्व-हित' या 'राष्ट्र-हित' है। उद्धव का तर्क है कि राजनीति में बिना किसी ठोस लाभ या उद्देश्य के कोई भी कदम नहीं उठाना चाहिए।

श्लोक का तुलनात्मक विश्लेषण तालिका:

पात्र/इकाई	क्रिया (कार्य)	प्रयोजन (स्वार्थ)
पाण्डव	राजसूय यज्ञ करना	स्वर्ग और सार्वभौम सत्ता की प्राप्ति
इन्द्र	तपस्वियों की रक्षा	अपने स्वर्ग लोक की स्थिरता
श्रीकृष्ण/यादव	शत्रुओं का हनन	यादव राज्य की सुरक्षा और धर्म स्थापना
निष्कर्ष	**प्रतीहते/समीहते**	**प्रत्येक कार्य के मूल में स्वार्थ (प्रयोजन) है**

रोचक तथ्य:

• **(a) माघ का अर्थगौरव:** इस श्लोक के माध्यम से माघ ने सिद्ध किया है कि महान उद्देश्य (जैसे यज्ञ या रक्षा) के पीछे भी एक न्यायसंगत 'प्रयोजन' होता है।

• **(b) प्रतीहते बनाम समीहते:** मूल पाठ में 'प्रतीहते' का प्रयोग 'चेष्टा' या 'प्रयत्न' के अर्थ में हुआ है, जो प्रायः उद्धरणों में 'समीहते' के रूप में प्रसिद्ध हो गया है।

• **(c) नीतिशास्त्र का आधार:** यह श्लोक न्याय दर्शन के उस सूत्र की पुष्टि करता है— *"प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते"* (बिना उद्देश्य के मूर्ख भी कार्य नहीं करता)।

Q31. 'शश्वत' निपातस्य प्रयोगः भवति-

(a) विद्याप्रकर्षे

(b) विचिकित्सार्थे

(c) हेत्वपदेशे

(d) विनिग्रहार्थे

परिचय: निरुक्तकार आचार्य यास्क ने वेदों के कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति करते समय 'निपात' (Particles) के विभिन्न प्रयोगों और उनके अर्थों का सूक्ष्म विवेचन किया है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) विचिकित्सार्थे** है। निरुक्त के प्रथम अध्याय में आचार्य यास्क ने निपातों के प्रयोग पर विस्तार से चर्चा की है:

• **विचिकित्सा का अर्थ:** संस्कृत व्याकरण और निरुक्त में 'विचिकित्सा' शब्द का अर्थ **'संदेह' (Doubt)** या 'संशय' होता है।

• **शश्वत निपात:** जब किसी वाक्य में संदेह या अनिश्चय की स्थिति प्रकट करनी होती है, तब 'शश्वत' निपात का प्रयोग किया जाता है। यास्क के अनुसार, "शश्वदिति विचिकित्सार्थीयो निपातः"।

• **वैदिक प्रयोग:** वेदों में जहाँ कहीं भी क्रिया की निरंतरता के साथ-साथ किसी परिणाम के प्रति संशय व्यक्त होता है, वहाँ इस निपात का दर्शन होता है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दिए गए अर्थों के लिए प्रयुक्त होने वाले निपात और उनके पारिभाषिक अर्थ इस प्रकार हैं:

• **(a) विद्याप्रकर्षे:** ज्ञान की अधिकता या प्रकर्ष बताने के लिए 'किल' जैसे निपातों का प्रयोग होता है।

• **(c) हेत्वपदेशे:** कारण बताने (Reasoning) के लिए 'हि' निपात का प्रयोग प्रसिद्ध है (हि इति हेत्वपदेशे)।

• **(d) विनिग्रहार्थे:** किसी विषय को विशेष रूप से रोकने या सीमित करने के लिए विनिग्रहार्थक निपातों का प्रयोग होता है।

प्रमुख निपात और उनके अर्थों की तालिका:

निपात	अर्थ/प्रयोजन	उदाहरण/विवरण
शश्वत	**विचिकित्सा (संदेह)**	संशय की स्थिति को दर्शाने हेतु
हि	हेत्वपदेश (कारण)	हेतु या कारण बताने के लिए
इत्	पदपूरण	छंद की पूर्ति हेतु (निरर्थक)
न	प्रतिषेध / उपमा	निषेध या तुलना (इव के अर्थ में)
किम्	प्रश्न	जिज्ञासा या प्रश्न पूछने हेतु

विशेष: आचार्य यास्क ने निपातों को तीन श्रेणियों में बाँटा है— उपमार्थक (तुलना हेतु), कर्मोपसंग्रहार्थक (अनेक अर्थों को जोड़ने हेतु) और पदपूरण (श्लोक की पूर्ति हेतु)। 'शश्वत' इनमें से भावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति से जुड़ा निपात है।

Q32. रस-दोषान् क्रमेण व्यवस्थापयन्तु।

1. स्थायीभाव-शब्दवाच्यता
2. प्रतिकूलविभावादिग्रहः
3. अकाण्डे प्रथनम्
4. रस-शब्दवाच्यता
5. प्रकृतीनां विपर्ययः

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 4,1, 2,3,5
(b) 1,3, 2,4,5
(c) 3,4,1,2,5
(d) 2, 4,3,1,5

परिचय: काव्यप्रकाश के सप्तम उल्लास में आचार्य मम्मट ने काव्य के दोषों का विवेचन करते हुए 'रस-दोषों' का वर्णन किया है, जो रसास्वादन में बाधा उत्पन्न करते हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(a) 4, 1, 2, 3, 5** है। आचार्य मम्मट ने कुल 13 प्रकार के रस-दोषों का उल्लेख किया है। प्रश्न में दिए गए दोषों का शास्त्रीय क्रम इस प्रकार है:

1. **रस-शब्दवाच्यता (4):** रस का नाम लेकर (जैसे 'श्रृंगार रस') उसे प्रकट करना दोष है, क्योंकि रस व्यञ्जना का विषय है, वाच्य का नहीं।

2. **स्थायीभाव-शब्दवाच्यता (1):** स्थायी भावों (जैसे रति, हास आदि) का नामतः उल्लेख करना भी रस दोष माना जाता है।

3. **प्रतिकूलविभावादिग्रहः (2):** जिस रस का वर्णन हो रहा हो, उसके विरोधी रस के विभावों, अनुभावों या व्यभिचारी भावों का वर्णन करना।

4. **अकाण्डे प्रथनम् (3):** बिना अवसर के या अनुपयुक्त समय पर रस का विस्तार करना (जैसे युद्ध के बीच में श्रृंगार का वर्णन)।

5. **प्रकृतीनां विपर्ययः (5):** पात्रों की प्रकृति (उत्तम, मध्यम, अधम) के विपरीत आचरण या व्यवहार का वर्णन करना।

रोचक तथ्य: रसदोष के संदर्भ में अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां निम्नलिखित तालिका में दी गई हैं:

दोष का नाम	स्वरूप	उदाहरण/प्रभाव
पुनः पुनः दीप्ति	रस का बार-बार उद्दीपन	सहृदय को अरुचि पैदा करना
अकाण्डे छेद	अवसर पर रस को बीच में रोकना	रस भंग करना
अंगिनोऽननुसंधानम्	मुख्य रस को भूल जाना	कथा का बिखराव
अनंगस्य अतिविस्तृति	गौण विषय का बहुत विस्तार	मुख्य रस दब जाना

• **(b), (c) और (d) विकल्प:** ये विकल्प अशुद्ध हैं क्योंकि इनमें काव्यप्रकाश में वर्णित मूल कारिका के क्रम का उल्लंघन किया गया है।

• **परिहार:** आचार्य मम्मट ने यह भी स्पष्ट किया है कि कुछ विशेष स्थितियों में ये दोष भी 'अदोष' या 'गुण' में परिवर्तित हो जाते हैं (जैसे क्रोध में रौद्र रस का नाम लेना)।

• **ध्वन्यालोक:** ध्वनिवादी आचार्य आनंदवर्धन ने भी 'अनौचित्य' को ही रस भंग का सबसे बड़ा कारण माना है, जिसे मम्मट ने विस्तार दिया।

Q33. रस-दोषान् क्रमेण व्यवस्थापयन्तु।

1. स्थायीभाव-शब्दवाच्यता

2. प्रतिकूलविभावादिग्रहः

3. अकाण्डे प्रथनम्

4. रस-शब्दवाच्यता

5. प्रकृतीनां विपर्ययः

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 4,1, 2,3,5
(b) 1,3, 2,4,5
(c) 3,4,1,2,5
(d) 2, 4,3,1,5

परिचय: काव्यप्रकाश के सप्तम उल्लास में आचार्य मम्मट ने काव्य के दोषों का विवेचन करते हुए 'रस-दोषों' का वर्णन किया है, जो रसास्वादन में बाधा उत्पन्न करते हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(a) 4, 1, 2, 3, 5** है। आचार्य मम्मट ने कुल 13 प्रकार के रस-दोषों का उल्लेख किया है। प्रश्न में दिए गए दोषों का शास्त्रीय क्रम इस प्रकार है:

1. **रस-शब्दवाच्यता (4):** रस का नाम लेकर (जैसे 'श्रृंगार रस') उसे प्रकट करना दोष है, क्योंकि रस व्यञ्जना का विषय है, वाच्य का नहीं।

2. **स्थायीभाव-शब्दवाच्यता (1):** स्थायी भावों (जैसे रति, हास आदि) का नामतः उल्लेख करना भी रस दोष माना जाता है।

3. **प्रतिकूलविभावादिग्रहः (2):** जिस रस का वर्णन हो रहा हो, उसके विरोधी रस के विभावों, अनुभावों या व्यभिचारी भावों का वर्णन करना।

4. **अकाण्डे प्रथनम् (3):** बिना अवसर के या अनुपयुक्त समय पर रस का विस्तार करना (जैसे युद्ध के बीच में श्रृंगार का वर्णन)।

5. **प्रकृतीनां विपर्ययः (5):** पात्रों की प्रकृति (उत्तम, मध्यम, अधम) के विपरीत आचरण या व्यवहार का वर्णन करना।

रोचक तथ्य: रसदोष के संदर्भ में अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां निम्नलिखित तालिका में दी गई हैं:

दोष का नाम	स्वरूप	उदाहरण/प्रभाव
पुनः पुनः दीप्ति	रस का बार-बार उद्दीपन	सहृदय को अरुचि पैदा करना
अकाण्डे छेद	अवसर पर रस को बीच में रोकना	रस भंग करना
अंगिनोऽननुसंधानम्	मुख्य रस को भूल जाना	कथा का बिखराव
अनंगस्य अतिविस्तृति	गौण विषय का बहुत विस्तार	मुख्य रस दब जाना

• **(b), (c) और (d) विकल्प:** ये विकल्प अशुद्ध हैं क्योंकि इनमें काव्यप्रकाश में वर्णित मूल कारिका के क्रम का उल्लंघन किया गया है।

• **परिहार:** आचार्य मम्मट ने यह भी स्पष्ट किया है कि कुछ विशेष स्थितियों में ये दोष भी 'अदोष' या 'गुण' में परिवर्तित हो जाते हैं (जैसे क्रोध में रौद्र रस का नाम लेना)।

• **ध्वन्यालोक:** ध्वनिवादी आचार्य आनंदवर्धन ने भी 'अनौचित्य' को ही रस भंग का सबसे बड़ा कारण माना है, जिसे मम्मट ने विस्तार दिया।

Q34. आचार्य शंकरानुसारम् क्रमेण व्यवस्थापयन्तु-

1. लंघयामि
2. तिष्ठामि
3. गौरोऽहम्
4.कृशोऽहम्
5. गच्छामि

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 4,1,2,3,1
(b) 3,4,2,1,5
(c) **3,4,2,5,1**
(d) 2,4,3,5,1

परिचय: अद्वैत वेदांत के प्रवर्तक आचार्य शंकर ने 'अध्यास' (एक वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम) को समझाने के लिए शरीर और इंद्रियों के धर्मों का आत्मा पर आरोपण होने के विभिन्न सोपानों का वर्णन किया है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) 3, 4, 2, 5, 1** है। आचार्य शंकर के 'ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य' (अध्यास भाष्य) के अनुसार, मनुष्य अज्ञानवश देह और उसकी क्रियाओं को अपनी आत्मा मान लेता है। इसका क्रमिक विकास इस प्रकार है:

1. **गौरोऽहम् (3):** सबसे पहले व्यक्ति शरीर के रंग (वर्ण) का आरोप आत्मा पर करता है कि "मैं गोरा हूँ"। यह देहाध्यास का प्रथम सोपान है।
2. **कृशोऽहम् (4):** इसके पश्चात शरीर की अवस्था का आरोपण होता है कि "मैं दुबला हूँ"। यहाँ स्थूल शरीर के धर्मों को 'अहं' के साथ जोड़ा जाता है।
3. **तिष्ठामि (2):** फिर शरीर की स्थिति का बोध होता है— "मैं बैठा हूँ या स्थित हूँ"।
4. **गच्छामि (5):** इसके बाद गमन क्रिया का आरोप होता है— "मैं जा रहा हूँ"।
5. **लंघयामि (1):** अंत में विशिष्ट शारीरिक क्रियाओं (जैसे लांघना या कूदना) का बोध होता है— "मैं लांघ रहा हूँ"।

रोचक तथ्य: * **अध्यास का स्वरूप:** 'अतस्मिन् तद्बुद्धिः' अर्थात् जो वस्तु जैसी नहीं है, उसमें वैसी बुद्धि होना ही अध्यास है। जैसे रस्सी में साँप का भ्रम।

• **त्रिविध अध्यास:** * **देहाध्यास:** शरीर के धर्मों (गोरा, काला, मोटा) का आत्मा पर आरोप।

○ **इन्द्रियाध्यास:** इन्द्रियों के धर्मों (अंधा, बहरा) का आत्मा पर आरोप।

○ **अन्तःकरणाध्यास:** मन के धर्मों (सुख, दुःख) का आत्मा पर आरोप।

• **(a), (b) और (d) विकल्प:** ये विकल्प दार्शनिक तर्क और भाष्य के पाठ के अनुसार अशुद्ध हैं, क्योंकि वे स्थूल से सूक्ष्म और अवस्था से क्रिया के स्वाभाविक क्रम का पालन नहीं करते।

अध्यास प्रक्रिया की तालिका:

स्तर	**उदाहरण**	**आरोपित धर्म**
वर्ण/रूप	गौरोऽहम्	शरीर का रंग
अवस्था	कृशोऽहम्	शरीर की बनावट
स्थिति	तिष्ठामि	शरीर की गतिहीनता
गति	गच्छामि	शरीर की सामान्य गति
विशिष्ट क्रिया	लंघयामि	शरीर की विशेष चेष्टा

Q35. एतेषु तारापीडस्य राजधानी का-

(a) विदिशा

(b) पांचाल

(c) मत्स्य

(d) उज्जयिनी

परिचय: महाकवि बाणभट्ट विरचित 'कादम्बरी' महाश्वेता और पुण्डरीक तथा कादम्बरी और चन्द्रापीड के तीन जन्मों की अद्भुत कथा है, जिसमें राजा तारापीड का वर्णन आता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(d) उज्जयिनी** है।

• **कादम्बरी का कथानक:** बाणभट्ट ने अपनी सुप्रसिद्ध कथा 'कादम्बरी' के प्रारंभ में राजा तारापीड और उनकी राजधानी का भव्य वर्णन किया है।

• **उज्जयिनी (अवन्ती):** राजा तारापीड की राजधानी **उज्जयिनी** (वर्तमान उज्जैन) थी। इसे 'अवन्ती' नगरी के नाम से भी जाना जाता है। बाणभट्ट ने इसका वर्णन करते हुए इसे स्वर्ग के एक टुकड़े के समान बताया है।

• **शासक:** तारापीड एक प्रतापी राजा थे, जिनके मंत्री का नाम **शुकनास** था। तारापीड के पुत्र का नाम **चन्द्रापीड** था, जो इस कथा का नायक है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों का साहित्यिक संदर्भ इस प्रकार है:

• **(a) विदिशा:** यह राजा **शूद्रक** की राजधानी थी। कादम्बरी कथा के 'मुख' (प्रारंभ) में शूद्रक का वर्णन आता है, जिसके पास एक चाण्डाल कन्या 'वैशम्पायन' नामक तोते को लेकर आती है।

• **(b) पांचाल:** यह प्राचीन भारत का एक महाजनपद था। महाभारत में द्रुपद यहाँ के राजा थे, किंतु कादम्बरी के मुख्य पात्रों से इसका सीधा संबंध राजधानी के रूप में नहीं है।

• **(c) मत्स्य:** यह भी एक प्राचीन जनपद था (राजधानी विराटनगर), जिसका उल्लेख महाभारत के विराट पर्व में मिलता है।

कादम्बरी के प्रमुख स्थान और पात्र:

पात्र/स्थान	**विवरण**
तारापीड	उज्जयिनी का राजा (नायक का पिता)
शुकनास	तारापीड का बुद्धिमान मंत्री
उज्जयिनी	चन्द्रापीड का जन्मस्थान और राजधानी
विदिशा	राजा शूद्रक की राजधानी (कथा का आरंभिक स्थल)
अच्छोद सरोवर	जहाँ महाश्वेता तपस्या कर रही थी

Q36. 'विश्ववाह' शब्दस्य द्वितीया-विभक्तेः बहुवचनस्य रूपम् अस्ति -

(a) विश्ववाहः

(b) विश्ववाहान्

(c) विश्वौहः

(d) विश्ववाहम्

प्रश्न संख्या 36 का विस्तृत उत्तर

परिचय: 'विश्ववाह' शब्द (विश्व + वह् + क्विप्) एक ओकारान्त/हलन्त पुल्लिंग शब्द है जिसका अर्थ 'विश्व को धारण करने वाला' होता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) विश्वौहः** है। व्याकरणिक दृष्टि से इस रूप की सिद्धि विशेष प्रक्रिया द्वारा होती है:

• **संप्रसारण कार्य:** 'विश्ववाह' शब्द में 'वाह' के 'व' को **'वाह ऊठ्'** (अष्टाध्यायी 6.4.132) सूत्र द्वारा 'ऊठ्' (ऊ) आदेश होता है।

• **वृद्धि सन्धि:** इसके पश्चात 'विश्व' के 'व' के 'अ' और 'ऊ' के मध्य 'एत्येधत्यूठ्सु' सूत्र से वृद्धि एकादेश होकर 'विश्वौह' अंग बनता है।

• **विभक्ति प्रयोग:** द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में 'शस्' प्रत्यय लगता है। 'विश्वौह + अस्' मिलकर **'विश्वौहः'** रूप सिद्ध होता है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों का विश्लेषण इस प्रकार है:

• **(a) विश्ववाहः:** यह रूप प्रथमा विभक्ति के एकवचन में विसर्ग संधि के नियमों के अभाव में अशुद्ध है (प्रथमा एकवचन में 'विश्ववाट्' बनता है)।

• **(b) विश्ववाहान्:** सामान्य 'अकारान्त' शब्दों (जैसे रामान्) में 'अन्' लगता है, किंतु 'वह्' धातु से बने शब्दों में संप्रसारण होने के कारण यह रूप अशुद्ध है।

• **(d) विश्ववाहम्:** यह द्वितीया विभक्ति के **एकवचन** का रूप है (विश्ववाह् + अम्)।

'विश्ववाह' शब्द की महत्वपूर्ण विभक्तियाँ:

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	विश्ववाट्	विश्ववाहौ	विश्ववाहः
द्वितीया	विश्ववाहम्	विश्ववाहौ	**विश्वौहः**
तृतीया	विश्वौहा	विश्ववाड्भ्याम्	विश्ववाड्भिः

विशेष: इस शब्द की सिद्धि में 'भ' संज्ञक प्रत्ययों (आ, ए, अस् आदि) के परे होने पर ही संप्रसारण (ऊठ्) कार्य होता है, इसीलिए प्रथमा और द्वितीया के कुछ रूपों में 'वा' सुनाई देता है और कुछ में 'औ' (जैसे— विश्वौहः, विश्वौहा)।

Q38. अधोलिखितेषु याज्ञवल्क्यस्मृतेः व्यवहाराध्यायस्य प्रकरणाणि सन्ति -

1.दानप्रकरण

2. ऋणादानप्रकरण

3. स्त्रीसंग्रहणप्रकरण

4.प्रायश्चित्त प्रकरण

5. दायविभागप्रकरण

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 1 एवं 3 केवलम्

(b) 2,3 एवं 5 केवलम्

(c) 1,2 एवं 5 केवलम्

(d) 2 एवं 4 केवलम्

परिचय: याज्ञवल्क्यस्मृति एक अत्यंत व्यवस्थित धर्मशास्त्रीय ग्रंथ है, जो आचार, व्यवहार और प्रायश्चित्त नामक तीन अध्यायों में विभाजित है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) 2, 3 एवं 5 केवलम्** है। याज्ञवल्क्यस्मृति का द्वितीय अध्याय 'व्यवहाराध्याय' कहलाता है, जिसमें कुल **25 प्रकरण** और 307 श्लोक हैं। इसमें न्याय व्यवस्था और कानूनी प्रक्रियाओं का वर्णन है:

• **ऋणादानप्रकरण (2):** यह व्यवहाराध्याय का महत्वपूर्ण प्रकरण है जिसमें ऋण लेने, देने और ब्याज से संबंधित नियमों का वर्णन है।

• **स्त्रीसंग्रहणप्रकरण (3):** इसके अंतर्गत व्यभिचार और अवैध संबंधों से संबंधित दंड और न्याय का विधान किया गया है।

• **दायविभागप्रकरण (5):** इसमें पैतृक संपत्ति के विभाजन और उत्तराधिकार के नियमों का विस्तृत वर्णन है, जो वर्तमान हिंदू कानून का भी आधार है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दिए गए प्रकरण व्यवहाराध्याय के अंतर्गत नहीं आते:

• **(1) दानप्रकरण:** यह याज्ञवल्क्यस्मृति के प्रथम अध्याय **'आचाराध्याय'** के अंतर्गत आता है।

• **(4) प्रायश्चित्त प्रकरण:** यह स्मृति के तृतीय अध्याय **'प्रायश्चित्ताध्याय'** का विषय है, जहाँ पापों की शुद्धि के उपाय बताए गए हैं।

व्यवहाराध्याय के प्रमुख प्रकरणों की तालिका:

क्रम	**प्रकरण का नाम**	**मुख्य विषय**
1	**साधारण व्यवहार**	न्याय की सामान्य प्रक्रिया
2	**ऋणादान**	ऋण एवं ब्याज संबंधी नियम
3	**उपनिधि**	धरोहर या अमानत रखना
4	**साक्षी**	गवाही और सबूत
5	**लेख्य**	लिखित दस्तावेज/प्रमाण
6	**दायविभाग**	संपत्ति का बँटवारा
7	**स्त्रीसंग्रहण**	अनैतिक संबंधों पर दंड

विशेष: याज्ञवल्क्यस्मृति के व्यवहाराध्याय पर **विज्ञानेश्वर** द्वारा रचित **'मितक्षरा'** टीका भारतीय कानून के इतिहास में अत्यंत प्रतिष्ठित मानी जाती है।

Q39. परस्परं समुचितं मेलयत –

LIST I	LIST II
A. अर्थविस्तारः	I. गौ
B. अर्थादेश	II. सभ्य
C. अर्थसंकोच	III. मौन
D. अर्थोत्कर्ष	IV. प्रवीण

दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(a) A-I, B-IV, C-II, D-III
(b) A-III, B-I, C-II, D-IV
(c) A- III, B-IV, C-I, D-II
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

परिचय: भाषा विज्ञान के अंतर्गत समय के साथ शब्दों के अर्थों में होने वाले परिवर्तनों को 'अर्थ-परिवर्तन' कहा जाता है, जिसकी प्रमुख तीन दिशाएँ (विस्तार, संकोच, आदेश) और दो उप-दिशाएँ (उत्कर्ष, अपकर्ष) होती हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(d) A-IV, B-III, C-I, D-II** है। अर्थ परिवर्तन की दिशाओं का शब्दों के साथ मिलान इस प्रकार है:

• **अर्थविस्तार - प्रवीण (A-IV):** प्राचीन काल में 'प्रवीण' का अर्थ केवल 'वीणा बजाने में कुशल' था, परंतु अब इसका अर्थ किसी भी कार्य में 'निपुण' व्यक्ति के लिए होता है। इसे अर्थ का विस्तार कहते हैं।

• **अर्थादेश - मौन (B-III):** जब कोई शब्द अपने मूल अर्थ को छोड़कर बिल्कुल नया अर्थ ग्रहण कर ले। 'मौन' मूल रूप से 'मुनि' से संबंधित था, पर अब इसका अर्थ 'चुप रहना' हो गया है।

• **अर्थसंकोच - गौ (C-I):** 'गौ' शब्द मूल रूप से 'गमन करने वाली' किसी भी वस्तु के लिए था, किंतु अब यह केवल एक विशेष पशु (गाय) के लिए रूढ़ हो गया है। इसे अर्थ का संकुचित होना कहते हैं।

• **अर्थोत्कर्ष - सभ्य (D-II):** प्राचीन काल में 'सभ्य' का अर्थ केवल 'सभा में बैठने वाला' था, किंतु अब इसका अर्थ 'शिष्ट' या 'भद्र' पुरुष हो गया है। अर्थ के मूल्य में वृद्धि होना ही उत्कर्ष है।

उचित मिलान तालिका:

अर्थ परिवर्तन की दिशा	उदाहरण शब्द	प्राचीन अर्थ	आधुनिक अर्थ
अर्थविस्तार	**प्रवीण**	वीणा बजाने में कुशल	किसी भी क्षेत्र में निपुण
अर्थादेश	**मौन**	मुनि का भाव/कार्य	चुप रहना (वाक् संयम)
अर्थसंकोच	**गौ**	चलने वाली वस्तु	एक विशेष दुधारू पशु
अर्थोत्कर्ष	**सभ्य**	सभा में उपस्थित	शिष्ट एवं सुसंस्कृत

रोचक तथ्य: अर्थ परिवर्तन की दिशाओं से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण बिंदु:

• **अर्थापकर्ष:** यह अर्थोत्कर्ष का उल्टा है, जहाँ शब्द का अर्थ श्रेष्ठ से निम्न हो जाता है। उदाहरण के लिए— 'असुर' (मूल अर्थ: देव/प्राणवान, आधुनिक अर्थ: दानव)।

• **अन्य उदाहरण:** 'मृग' शब्द पहले सभी जंगली पशुओं के लिए था (अर्थविस्तार), पर अब केवल हिरण के लिए है (अर्थसंकोच)।

• **भाषा विज्ञान:** डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अर्थ परिवर्तन के मुख्य कारण मानसिक, भौतिक और सामाजिक परिस्थितियाँ होती हैं।

Q43. एतेषु शर्विलकस्य प्रेमिका आसीत्-

(a) रदनिका

(b) धूता

(c) मदनिका

(d) वसंतसेना

परिचय: महाकवि शूद्रक द्वारा रचित 'मृच्छकटिकम्' प्रकरण के अंतर्गत शर्विलक एक ब्राह्मण चोर है, जिसका प्रेम मदनिका नामक गणिका की परिचारिका से दिखाया गया है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही विकल्प **(c) मदनिका** है।

• **पात्र परिचय:** शर्विलक इस नाटक का एक महत्वपूर्ण गौण पात्र है जो वसंतसेना की दासी **मदनिका** से प्रेम करता है।

• **घटनाक्रम:** शर्विलक मदनिका को दासता (गुलामी) के बंधन से मुक्त कराना चाहता है। इसके लिए वह दरिद्र चारुदत्त के घर में चोरी करता है और स्वर्णालंकारों का आभूषण पात्र चुरा लेता है।

• **विवाह:** चोरी किए गए आभूषणों को जब वह वसंतसेना के यहाँ लेकर जाता है, तो वसंतसेना उसकी ईमानदारी (जो उसने मदनिका के प्रति दिखाई) से प्रसन्न होकर मदनिका को मुक्त कर देती है और दोनों का विवाह संपन्न होता है।

• **क्रांतिकारी भूमिका:** बाद में शर्विलक एक क्रांतिकारी की भूमिका निभाता है और अत्याचारी राजा पालक का वध कर आर्यक को राजा बनाने में सहायता करता है।

रोचक तथ्य: नाटक के अन्य महिला पात्रों का विवरण इस प्रकार है:

• **(a) रदनिका:** यह नायक चारुदत्त के घर की एक **वृद्ध और विश्वसनीय परिचारिका** (दासी) है। नाटक के प्रथम अंक में 'रदनिका-मर्दन' नामक प्रसंग प्रसिद्ध है।

• **(b) धूता:** यह **चारुदत्त की धर्मपत्नी** और रोहसेन की माता है। वह अत्यंत पतिव्रता और उदार महिला है, जो अपने पति के संकट को दूर करने के लिए अपनी रत्नमाला दान कर देती है।

• **(d) वसंतसेना:** यह इस नाटक की **मुख्य नायिका** है, जो उज्जयिनी की एक अत्यंत धनी और कलाप्रेमी गणिका है। वह नायक चारुदत्त से प्रेम करती है।

मृच्छकटिकम् के प्रमुख युगल (जोड़े):

पुरुष पात्र	महिला पात्र (प्रेमिका/पत्नी)	संबंध का स्वरूप
चारुदत्त	वसंतसेना	मुख्य प्रेम संबंध
शर्विलक	**मदनिका**	विवाह और दासता से मुक्ति
चारुदत्त	धूता	दांपत्य प्रेम (पति-पत्नी)

Q40. अर्थशास्त्रस्य अधिकरणानि क्रमेण व्यवस्थापयन्तु-

1. साङ्ग्रामिक

2. विनयाधिकारिक

3. मण्डल्योनि

4. षाड्गुण्य

5. अध्यक्षप्रचार

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 4,1, 2,3,5
(b) 1,3, 2,4,5
(c) 2,5,3,4,1
(d) 2,3,5,4,1

परिचय: कौटिल्य रचित 'अर्थशास्त्र' राज्य संचालन और राजनीति का एक महान ग्रंथ है, जो 15 अधिकरणों, 150 अध्यायों और 180 प्रकरणों में विभाजित है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) 2, 5, 3, 4, 1** है। अर्थशास्त्र के अधिकरणों का क्रमिक विवरण इस प्रकार है:

• **विनयाधिकारिक (2):** यह प्रथम अधिकरण है, जिसमें राजा के अनुशासन, शिक्षा और अमात्यों की नियुक्ति का वर्णन है।

• **अध्यक्षप्रचार (5):** यह द्वितीय अधिकरण है, जिसमें राज्य के विभिन्न विभागों के अध्यक्षों (मन्त्रियों) के कार्यों का विस्तार से वर्णन है।

• **मण्डल्योनि (3):** यह छठा अधिकरण है, जिसमें राज्यमण्डल (विभिन्न राज्यों के आपसी संबंधों का आधार) का विवेचन है।

• **षाड्गुण्य (4):** यह सातवाँ अधिकरण है, जिसमें विदेश नीति के छह गुणों (संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय, द्वैधीभाव) का वर्णन है।

• **साङ्ग्रामिक (1):** यह दसवाँ अधिकरण है, जिसमें युद्ध के नियमों, सैन्य संचालन और व्यूह रचना की विधियाँ बताई गई हैं।

रोचक तथ्य: अर्थशास्त्र के अन्य अधिकरणों और उनकी विषय-वस्तु का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:

अधिकरण संख्या	नाम	मुख्य विषय
तृतीय	**धर्मस्थीय**	दीवानी कानून (Civil Law)
चतुर्थ	**कण्टकशोधन**	फौजदारी कानून (Criminal Law)
पंचम	**योगवृत्त**	राजभृत्यों के कर्तव्य
अष्टम	**व्यसनाधिकारिक**	राज्य की विपत्तियाँ (दोष)
पञ्चदश	**तन्त्रयुक्ति**	अर्थशास्त्र की व्याख्या विधि

• **(a), (b) और (d) विकल्प:** ये विकल्प अशुद्ध हैं क्योंकि इनमें प्रथम अधिकरण 'विनयाधिकारिक' के बाद 'अध्यक्षप्रचार' के स्थान पर अन्य अधिकरणों को रखा गया है जो क्रम विरुद्ध है।

• **महत्व:** अर्थशास्त्र के प्रथम पांच अधिकरण आंतरिक प्रशासन से और बाद के अधिकरण वैदेशिक नीति (Inter-state relations) से संबंधित हैं।

Q41. परस्परं समुचितं मेलयत –

LIST I	LIST II
A. वैदर्भी	I. ओजगुणयुक्ता
B. पांचाली	II. माधुर्यगुणयुक्ता
C. गौडी	III. प्रसादगुणयुक्ता
D. लाटी	IV. ओजप्रसादगुणयुक्ता

दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(a) A-I, B-IV, C-II, D-III
(b) A-II, B-III, C-I, D-IV
(c) A- II, B-III, C-IV, D-I
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

परिचय: संस्कृत काव्यशास्त्र में 'रीति' को काव्य की आत्मा या विशिष्ट पद-रचना माना गया है, जिसका वर्गीकरण गुणों के आधार पर वैदर्भी, गौडी और पांचाली आदि भेदों में किया गया है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) A-II, B-III, C-I, D-IV** है। काव्यप्रकाश और साहित्यदर्पण जैसे ग्रंथों के अनुसार रीतियों का गुणों के साथ मिलान इस प्रकार है:

• **वैदर्भी - माधुर्यगुणयुक्ता (A-II):** यह रीति कोमल वर्णों से युक्त होती है। इसमें माधुर्य गुण की प्रधानता होती है और समासों का अभाव या बहुत कम प्रयोग होता है। इसे रीतियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

• **पांचाली - प्रसादगुणयुक्ता (B-III):** इस रीति में माधुर्य और सौकुमार्य गुणों का मिश्रण होता है। आचार्य मम्मट और विश्वनाथ के अनुसार, जहाँ शब्द और अर्थ का सामंजस्य हो और प्रसाद गुण व्याप्त हो, वहाँ पांचाली रीति होती है।

• **गौडी - ओजगुणयुक्ता (C-I):** यह रीति ओज गुण से ओत-प्रोत होती है। इसमें महाप्राण वर्णों, संयुक्त अक्षरों और दीर्घ समासों का प्रयोग अधिक होता है। वीर, रौद्र और भयानक रसों में यह विशेष प्रभावी होती है।

• **लाटी - ओजप्रसादगुणयुक्ता (D-IV):** यह वैदर्भी और पांचाली के मध्य की रीति मानी जाती है। इसमें ओज और प्रसाद गुणों का संतुलित मिश्रण पाया जाता है।

उचित मिलान तालिका:

सूची I (रीति)	**सूची II (सम्बद्ध गुण)**	**प्रमुख विशेषता**
वैदर्भी	**माधुर्य**	कोमल कान्त पदावली, समासहीनता
पांचाली	**प्रसाद**	सुकुमार शब्द, स्पष्ट अर्थबोध
गौडी	**ओज**	दीर्घ समास, आडम्बरपूर्ण शब्द
लाटी	**ओज एवं प्रसाद**	मध्यम समास, मिश्रित प्रभाव

रोचक तथ्य: रीतियों से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण शास्त्रीय तथ्य:

• **रीतिरात्मा काव्यस्य:** आचार्य वामन ने रीति को काव्य की आत्मा घोषित किया है। उन्होंने रीतियों की संख्या तीन (वैदर्भी, गौडी, पांचाली) मानी थी।

• **चौथी रीति:** आचार्य रुद्रट ने **'लाटी'** नामक चौथी रीति का समावेश किया, जिसे बाद के आचार्यों ने भी मान्यता दी।

• **वक्रोक्तिजीवितम्:** आचार्य कुन्तक ने रीतियों को 'मार्ग' कहा है (सुकुमार, विचित्र और मध्यम मार्ग)।

• **(a), (c) और (d) विकल्प:** ये विकल्प अशुद्ध हैं क्योंकि इनमें काव्यशास्त्रीय परंपरा के अनुसार गुणों और रीतियों का संबंध सही प्रकार से स्थापित नहीं किया गया है।

Q42. एतेषु यजुर्वेदीया शिक्षा सन्ति-

1. लोमशी शिक्षा
2. मांडव्य शिक्षा
3. मान्डूकी शिक्षा
4. वासिष्ठी शिक्षा
5. व्यास शिक्षा

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 1 एवं 3 केवलम्

(b) 1,2 एवं 4 केवलम्

(c) 2,4 एवं 5 केवलम्

(d) 2 एवं 5 केवलम्

परिचय: वेदों के शुद्ध उच्चारण, स्वर और वर्णों के वैज्ञानिक विवेचन हेतु रचित ग्रंथ 'शिक्षा' कहलाते हैं, जिन्हें वेद पुरुष का 'नासिका' (नाक) माना गया है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) 2, 4 एवं 5 केवलम्** है। यजुर्वेद की दो मुख्य शाखाएँ हैं— शुक्ल और कृष्ण। इनसे संबंधित शिक्षा ग्रंथ निम्नलिखित हैं:

• **मांडव्य शिक्षा (2):** यह शिक्षा ग्रंथ मुख्य रूप से **शुक्ल यजुर्वेद** की माध्यमंदिन शाखा से संबंधित है। इसमें स्वर प्रक्रिया और वर्णों के उच्चारण के सूक्ष्म नियम दिए गए हैं।

• **वासिष्ठी शिक्षा (4):** यद्यपि वशिष्ठ नाम से ऋग्वेद की भी शिक्षा प्रसिद्ध है, किंतु 'वासिष्ठी शिक्षा' का एक विशिष्ट संस्करण **शुक्ल यजुर्वेद** से भी संबद्ध माना जाता है।

• **व्यास शिक्षा (5):** यह **कृष्ण यजुर्वेद** की तैत्तिरीय शाखा का सबसे प्रामाणिक शिक्षा ग्रंथ है। इसमें तैत्तिरीय संहिता के पाठों को शुद्ध रखने के लिए वर्ण-नियमों का विस्तार से वर्णन है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दी गई शिक्षाओं का वेदानुसार वर्गीकरण इस प्रकार है:

• **(1) लोमशी शिक्षा:** इस शिक्षा का संबंध **सामवेद** से है। इसमें सामगायन के समय स्वरों के प्रयोग और अंगों (हाथ की अंगुलियों) के संचालन का वर्णन है।

• **(3) मान्डूकी शिक्षा:** यह **अथर्ववेद** की अत्यंत महत्वपूर्ण और एकमात्र प्रतिनिधि शिक्षा है। इसका नाम 'मांडव्य' से मिलता-जुलता है, जिससे प्रायः भ्रम होता है, परंतु यह अथर्ववेदीय है।

वेदों के प्रमुख शिक्षा ग्रंथों की तुलनात्मक तालिका:

वेद का नाम	**प्रमुख शिक्षा ग्रंथ**	**मुख्य शाखा**
ऋग्वेद	पाणिनीय शिक्षा, शैशिरीयशिक्षा, आपिशलि शिक्षा'	शाकल
यजुर्वेद	**याज्ञवल्क्य, मांडव्य, वासिष्ठी, व्यास**	शुक्ल एवं कृष्ण
सामवेद	नारदीय, लोमशी, गौतम शिक्षा	कौथुम
अथर्ववेद	मान्डूकी शिक्षा	शौनक

विशेष: शिक्षा शास्त्र का मुख्य उद्देश्य 'वर्ण', 'स्वर', 'मात्रा', 'बल', 'साम' और 'संतान'—इन छह अंगों का सम्यक् ज्ञान कराना है, जैसा कि तैत्तिरीयोपनिषद के शीक्षावल्ली में कहा गया है।

Q43. परस्परं समुचितं मेलयत –

LIST I	LIST II
A. अत्रि	I. चतुर्थ मंडल
B. वामदेव	II. पंचम मंडल
C. गृत्समद	III. षष्ठ मंडल
D. भरद्वाज	IV. द्वितीय मंडल

दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(a) A-I, B-IV, C-II, D-III
(b) A-II, B-I, C-IV, D-III
(c) A- II, B-V, C-I, D-III
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

परिचय: ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल से लेकर सप्तम मण्डल तक के भाग को 'वंश मण्डल' या 'ऋषि मण्डल' कहा जाता है, क्योंकि इनमें से प्रत्येक मण्डल एक विशिष्ट ऋषि परिवार से संबद्ध है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) A-II, B-I, C-IV, D-III** है। ऋग्वेद के ऋषियों और उनके मण्डलों का मिलान इस प्रकार है:

• **अत्रि - पंचम मंडल (A-II):** ऋग्वेद का पाँचवाँ मण्डल महर्षि अत्रि और उनके वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्रों का संग्रह है।

• **वामदेव - चतुर्थ मंडल (B-I):** चतुर्थ मण्डल के प्रधान ऋषि वामदेव गौतम हैं। इस मण्डल में कृषि से संबंधित प्रसिद्ध मन्त्र भी प्राप्त होते हैं।

• **गृत्समद - द्वितीय मंडल (C-IV):** ऋग्वेद का दूसरा मण्डल गृत्समद ऋषि से संबंधित है। यह वंश मण्डलों में सबसे प्रथम आता है।

• **भरद्वाज - षष्ठ मंडल (D-III):** छठे मण्डल के द्रष्टा ऋषि महर्षि भरद्वाज हैं।

उचित मिलान तालिका:

मण्डल संख्या	**सम्बद्ध ऋषि**	**कुल सूक्त (लगभग)**
द्वितीय मण्डल	**गृत्समद**	43
तृतीय मण्डल	विश्वामित्र	62
चतुर्थ मण्डल	**वामदेव**	58
पंचम मण्डल	**अत्रि**	87
षष्ठ मण्डल	**भरद्वाज**	75
सप्तम मण्डल	वशिष्ठ	104

रोचक तथ्य: ऋग्वेद के मण्डलों से जुड़ी अन्य महत्वपूर्ण जानकारी:

• **वंश मण्डल:** द्वितीय से सप्तम मण्डल को सबसे प्राचीन मण्डल माना जाता है। इन्हें 'कुल मण्डल' भी कहते हैं।

• **प्रथम एवं दशम मण्डल:** ये मण्डल ऋग्वेद में सबसे अंत में जोड़े गए माने जाते हैं, इसलिए इन्हें 'अर्वाचीन' कहा जाता है।

• **नवम मण्डल:** यह मण्डल पूर्णतः **'सोम'** देवता को समर्पित है, इसलिए इसे 'पवमान मण्डल' भी कहा जाता है।

• **अष्टम मण्डल:** यह मण्डल मुख्य रूप से कण्व और अङ्गिरा वंश के ऋषियों से संबंधित है।

Q44. अशोकस्य अभिलेखेषु 'प्रियसप्रियदसिनो राञो पुरा महानसम्हि' इति पङ्क्तौ 'महान-सम-हि' पदस्य तात्पर्यं किम् भवति-

(a) महान् स हि

(b) महान् सिंहः

(c) महान् नृसिंहः

(d) महानसं हि

परिचय: सम्राट अशोक के प्रथम शिलालेख (गिरनार संस्करण) में जीव हत्या निषेध के संदर्भ में मौर्यकालीन राजकीय रसोई का उल्लेख प्राप्त होता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही विकल्प **(d) महानसं हि** है। अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत (पालि मिश्रित) है, जिसके शब्दों का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट है:

• **पदच्छेद:** अभिलेख की पंक्ति 'पुरा महानसम्हि' का संस्कृत रूपांतरण **'पुरा महानसे हि'** होता है।

• **अर्थ:** यहाँ **'महानस'** शब्द का अर्थ **'रसोईघर'** (Kitchen) है। 'महानसम्हि' में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है— "रसोईघर में"।

• **सन्दर्भ:** इस पूरी पंक्ति का अर्थ है कि "पहले (पुरा) राजा प्रियदर्शी की रसोई में (महानसम्हि) प्रतिदिन कई लाख जीव मांस के लिए मारे जाते थे, जिसे अब प्रतिबंधित कर दिया गया है।"

• **भाषाई विशेषता:** अशोक के अभिलेखों में 'म' और 'ह' जैसे वर्णों का प्रयोग विभक्ति चिह्नों को दर्शाने के लिए किया जाता था, जहाँ 'म-हि' स्थानीय प्राकृत रूप है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों में दिए गए भ्रमपूर्ण अर्थों का विश्लेषण इस प्रकार है:

• **(a) महान् स हि:** यह एक व्याकरणिक विच्छेद प्रतीत होता है, किंतु अभिलेख के ऐतिहासिक और प्रासंगिक संदर्भ (भोजन और जीव हत्या) में यह अर्थहीन है।

• **(b) महान् सिंहः:** यद्यपि अशोक के स्तंभों पर सिंह की आकृतियाँ (जैसे सारनाथ) प्राप्त होती हैं, किंतु इस शिलालेख की विषय-वस्तु जीव-दया से संबंधित है, सिंह से नहीं।

• **(c) महान् नृसिंहः:** यह एक धार्मिक संज्ञा है जिसका अशोक के प्रशासनिक अभिलेखों में कोई संदर्भ नहीं मिलता।

अशोक के प्रथम शिलालेख की मुख्य बातें:

प्राकृत पद	**संस्कृत छाया**	**हिन्दी अर्थ**
पुरा	पुरा	प्राचीन काल में / पहले
महानसम्हि	**महानसे (हि)**	**रसोईघर में**
अनुदिवसं	अनुदिवसम्	प्रतिदिन
पाणा	प्राणाः (जीवाः)	प्राणी (पशु)
मालभियिसु	आलभ्यन्ते स्म	मारे जाते थे

विशेष: इस अभिलेख में अशोक ने घोषणा की थी कि अब से केवल दो मोर (मयूरा) और एक हिरण (मृगो) ही मारे जाएंगे और भविष्य में वह भी बंद कर दिया जाएगा।

Q45. रुद्रदाम्णः गिरनार-शिलालेखस्य पञ्चम-पङ्क्तौ किम् तिथि लिखिता-

(a) मार्गशीर्ष बहुलतृतीया

(b) मार्गशीर्ष बहुलप्रतिपदा

(c) मार्गशीर्ष बहुलअमावास्या

(d) मार्गशीर्ष बहुलचतुर्दशी

प्रश्न संख्या 45 का विस्तृत उत्तर

परिचय: शक महाक्षत्रप रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख (150 ई.) संस्कृत भाषा में लिखित प्रथम विस्तृत और व्यवस्थित अभिलेख है, जो सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) मार्गशीर्ष बहुलप्रतिपदा** है। शिलालेख की पाँचवीं पंक्ति में उस ऐतिहासिक समय का वर्णन है जब महावृष्टि के कारण सुदर्शन झील का बाँध टूट गया था:

• **तिथि का उल्लेख:** अभिलेख में स्पष्ट रूप से उत्कीर्ण है— **"वर्षे द्विसप्ततितमे (72) मार्गशीर्षबहुलप्रतिपदि"**। इसका अर्थ है शक संवत् 72 (150 ईस्वी) के मार्गशीर्ष (अगहन) मास के कृष्ण पक्ष (बहुल) की प्रतिपदा (पड़वा) तिथि।

• **ऐतिहासिक संदर्भ:** इसी तिथि को भीषण वर्षा और तूफान के कारण सुदर्शन झील का तटबंध टूट गया था, जिसे बाद में रुद्रदामन ने अपने निजी कोष से बिना किसी 'बेगार' (विष्टि) के दुगुना मजबूत बनवाया।

• **लेख की भाषा:** यह शिलालेख शुद्ध संस्कृत चम्पू काव्य शैली का प्राचीनतम उदाहरण है, जिसमें दीर्घ समासों और अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

रोचक तथ्य: अन्य विकल्पों और अभिलेख से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी इस प्रकार है:

• **(a), (c) और (d) विकल्प:** ये तिथियाँ ऐतिहासिक रूप से अशुद्ध हैं क्योंकि शिलालेख में केवल 'बहुलप्रतिपदा' का ही उल्लेख मिलता है।

• **सुदर्शन झील का इतिहास:** इस झील का निर्माण **चन्द्रगुप्त मौर्य** के समय 'पुष्यगुप्त' ने कराया था, **अशोक** के समय 'तुषास्प' ने नहरें निकलवाईं और **रुद्रदामन** के समय 'सुविशाख' ने इसका पुनर्निर्माण कराया।

• **लेखक:** इस शिलालेख की रचना करने वाला कवि संस्कृत व्याकरण और राजनीति का ज्ञाता था, क्योंकि इसमें 'तर्क', 'शब्द' और 'विद्या' जैसे शब्दों का सुंदर प्रयोग मिलता है।

सुदर्शन झील के विकास की तालिका:

शासक का नाम	समय	अधिकारी/राज्यपाल	कार्य
चन्द्रगुप्त मौर्य	322 ई.पू.	पुष्यगुप्त वैश्य	झील का निर्माण
सम्राट अशोक	269 ई.पू.	यवनराज तुषास्प	नहरों का निर्माण
रुद्रदामन	150 ईस्वी	**सुविशाख** (पहलव)	बाँध का पुनर्निर्माण
स्कन्दगुप्त	455 ईस्वी	चक्रपालित	पुनः मरम्मत

Q46. कुन्तक मतानुसारम् वक्रोक्तेः भेदान् क्रमेण व्यवस्थापयन्तु-

1.वाक्य वक्रता

2. प्रकरण वक्रता

3.पदपूर्वार्ध वक्रता

4.प्रबन्ध वक्रता

5.वर्णविन्यास वक्रता

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 3,1, 2,5,4
(b) 5,3, 2,1,4
(c) 5,3,1,2,4
(d) 2,3,5,1,4

परिचय: आचार्य कुन्तक (10वीं-11वीं शताब्दी) ने अपने ग्रंथ **'वक्रोक्तिजीवितम्'** में वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा मानते हुए ('वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्') इसके छह प्रमुख भेदों का प्रतिपादन किया है। ये भेद वर्ण से लेकर संपूर्ण ग्रंथ तक के क्रमिक विकास को दर्शाते हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) 5, 3, 1, 2, 4** है। आचार्य कुन्तक द्वारा वर्णित वक्रोक्ति के भेदों का शास्त्रीय और तार्किक क्रम इस प्रकार है:

1. **वर्णविन्यास वक्रता (5):** यह सबसे प्राथमिक स्तर है जहाँ वर्णों की आवृत्ति या विशिष्ट विन्यास (जैसे अनुप्रास) से चमत्कार उत्पन्न होता है।

2. **पदपूर्वार्ध वक्रता (3):** यहाँ 'पद' के पूर्व भाग यानी 'प्रकृति' (Root) में वक्रता होती है। इसके अंतर्गत रूढ़ि-वैचित्र्य और उपचार-वक्रता जैसे उपभेद आते हैं।

3. **पदपरार्ध वक्रता (सूची में नहीं है, पर क्रम में आती है):** इसमें प्रत्यय, काल, पुरुष आदि के प्रयोग से चमत्कार आता है।

4. **वाक्य वक्रता (1):** जब चमत्कार पूरे वाक्य के अर्थ या बनावट में निहित हो। कुन्तक ने इसे 'अलंकार' के अंतर्गत समाहित किया है।

5. **प्रकरण वक्रता (2):** जब किसी कथा या नाटक के एक विशेष प्रसंग या अध्याय (Episode) में कल्पना के माध्यम से मौलिकता लाई जाती है।

6. **प्रबन्ध वक्रता (4):** यह वक्रता का उच्चतम रूप है, जहाँ पूरी कथावस्तु (संपूर्ण ग्रंथ) के मूल रूप में परिवर्तन कर उसे कलात्मक बनाया जाता है (जैसे रामायण की कथा को 'उत्तररामचरितम्' में नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना)।

रोचक तथ्य: वक्रोक्ति के इन भेदों को समझने के लिए निम्नलिखित तालिका सहायक होगी:

वक्रता का भेद	व्याप्ती (Scope)	उदाहरण/विशेषता
वर्णविन्यास	अक्षर/वर्ण	अनुप्रास और यमक का आधार
पदपूर्वार्ध	प्रकृति (Root)	"वह आदमी नहीं, पत्थर है" (उपचार वक्रता)
वाक्य	सम्पूर्ण वाक्य	अर्थालंकारों का क्षेत्र
प्रकरण	एक अंश/अध्याय	नाटक का कोई मर्मस्पर्शी दृश्य
प्रबन्ध	संपूर्ण ग्रंथ	मूल कथा में कवि द्वारा किया गया मौलिक परिवर्तन

• **विकल्प विश्लेषण:** विकल्प (c) लघुत्तम इकाई (वर्ण) से लेकर महत्तम इकाई (प्रबन्ध) के सही विकास क्रम को दर्शाता है। अन्य विकल्प (a, b, d) इस संरचनात्मक क्रम का पालन नहीं करते।

• **कुन्तक का योगदान:** कुन्तक ने वक्रोक्ति को केवल एक 'अलंकार' न मानकर उसे कवि की प्रतिभा (कविकर्म) से उत्पन्न वैचित्र्य माना है।

Q47."ब्रह्मवैवर्तपुराणे पञ्चपुत्राणां वर्णनं कस्मिन् खण्डे प्राप्यते –

(a) गणेशखण्डे

(b) कृष्णजन्मखण्डे

(c) ब्रह्मखण्डे

(d) प्रकृतिखण्डे

परिचय: ब्रह्मवैवर्त पुराण एक वैष्णव पुराण है, जिसे मुख्य रूप से चार खंडों में विभाजित किया गया है: ब्रह्म खंड, प्रकृति खंड, गणेश खंड और कृष्णजन्म खंड। इसमें सृष्टि उत्पत्ति और भगवान कृष्ण की लीलाओं का विस्तार से वर्णन है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(c) ब्रह्मखण्डे** है।

• **ब्रह्म खंड का विषय:** यह इस पुराण का प्रथम खंड है। इसमें ब्रह्म के स्वरूप और सृष्टि की प्रक्रिया का वर्णन मिलता है।

• **पञ्चपुत्राणां वर्णनम्:** ब्रह्म खंड के अंतर्गत ही ब्रह्मा जी के मानस पुत्रों की उत्पत्ति और उनके कार्यों का विवरण दिया गया है। विशेष रूप से, जब सृष्टि के विस्तार हेतु ब्रह्मा जी ने प्रयास किया, तब उनके पाँच प्रमुख मानस पुत्रों (सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार और नारद) के जन्म और उनके द्वारा संसार की असारता को समझकर तपस्या में लीन होने का प्रसंग इसी खंड में आता है।

• **संरचना:** ब्रह्मवैवर्त पुराण के कुल 18,000 श्लोक इन चार खंडों में वितरित हैं।

रोचक तथ्य: अन्य खंडों की मुख्य विषय-वस्तु इस प्रकार है:

• **(a) गणेशखंड:** इसमें भगवान गणेश के जन्म, उनके विवाह, पराक्रम और कार्तिकेय के साथ उनके संवादों का वर्णन है।

• **(b) कृष्णजन्मखंड:** यह इस पुराण का सबसे विशाल खंड है। इसमें भगवान कृष्ण के अवतार, रासलीला, कंस वध और उनके गोलोक गमन तक की कथाएँ हैं।

• **(d) प्रकृतिखंड:** इसमें विभिन्न देवियों (दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री और राधा) के स्वरूप और उनकी उत्पत्ति का वर्णन 'प्रकृति' के रूप में किया गया है।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के खंडों का विवरण:

खंड का नाम	**मुख्य देवता/विषय**	**महत्व**
ब्रह्म खंड	श्री कृष्ण और सृष्टि	**पञ्चपुत्रों की उत्पत्ति एवं दार्शनिक ज्ञान**
प्रकृति खंड	पञ्च-प्रकृति (देवियाँ)	नारी शक्ति और स्तुति
गणेश खंड	भगवान गणेश	विघ्न विनाशक एवं ज्ञान
कृष्णजन्म खंड	पूर्ण पुरुषोत्तम कृष्ण	भक्ति एवं चरित वर्णन

Q48. कृत्य-प्रत्ययान् क्रमेण व्यवस्थापयन्तु-

1. अनीयर्

2. ण्यत्

3. केलिमर

4. क्यप्

5. यत्

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 4,5, 1,3,2
(b) **1,3, 5,4,2**
(c) 2,5,3,4,1
(d) 2,3,5,4,1

परिचय: संस्कृत व्याकरण में पाणिनीय अष्टाध्यायी के तृतीय अध्याय (कृत्य प्रक्रिया) में 'कृत्य' संज्ञक प्रत्ययों का वर्णन है। ये प्रत्यय मुख्य रूप से 'योग्य' या 'चाहिए' के अर्थ में कर्मवाच्य और भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) 1, 3, 5, 4, 2** है। अष्टाध्यायी के सूत्रों के क्रमानुसार कृत्य प्रत्ययों की व्यवस्था इस प्रकार है:

1. **तव्यत्तव्यानीयरः (3.1.96):** इस सूत्र द्वारा सबसे पहले **तव्यत्, तव्य** और **अनीयर् (1)** प्रत्यय आते हैं।

2. **एली च (3.1.96):** कुछ विद्वान और वार्तिककार इसके साथ ही **केलिमर (3)** का उल्लेख करते हैं (जैसे 'पचेलिम' आदि के लिए)।

3. **अचो यत् (3.1.97):** इसके पश्चात स्वरान्त धातुओं से **यत् (5)** प्रत्यय का विधान किया गया है।

4. **एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप् (3.1.109):** यत् के बाद विशिष्ट धातुओं (इण्, स्तु, शास् आदि) से **क्यप् (4)** प्रत्यय का सूत्र आता है।

5. **ऋहलोर्ण्यत् (3.1.124):** कृत्य प्रक्रिया के अंत की ओर ऋकारान्त और हलन्त धातुओं के लिए **ण्यत् (2)** प्रत्यय का विधान है।

प्रत्ययों की विशेषता और उदाहरण तालिका:

प्रत्यय	सूत्र	प्रमुख उदाहरण	विशेषता
अनीयर्	तव्यत्तव्यानीयरः	पठनीयम्, करणीयम्	'र्' की इत्संज्ञा होती है।
केलिमर	केली च (वार्तिक)	पचेलिमम्, भिदेलिमम्	कर्मवाच्य में प्रयुक्त।
यत्	अचो यत्	चेयम्, नेयम्	स्वरान्त धातुओं से जुड़ता है।
क्यप्	एतिस्तुशास्...	स्तुत्यः, शिष्यः, कृत्यम्	इसमें गुण/वृद्धि नहीं होती।
ण्यत्	ऋहलोर्ण्यत्	कार्यम्, हार्यम्	आदि स्वर की वृद्धि होती है।

महत्वपूर्ण बिंदु:

• **कृत्य संज्ञक प्रत्यय:** पाणिनी के अनुसार कृत्य प्रत्ययों की संख्या सात मानी गई है: *तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, क्यप्, ण्यत्* और *केलिमर*।

• **वाच्य:** इन सभी प्रत्ययों का प्रयोग केवल **कर्मवाच्य (Passive)** और **भाववाच्य (Impersonal)** में ही होता है, कर्तृवाच्य में नहीं।

• **क्रम का आधार:** व्याकरण शास्त्र में उत्तरवर्ती सूत्र पूर्ववर्ती सूत्र के अपवाद या विशेष नियम के रूप में आते हैं, इसलिए इनका क्रम 'अष्टाध्यायी' के संरचनात्मक आधार पर निर्धारित है।

Q49. पाणिनीयशिक्षानुसारं अधम पाठकान् क्रमेण व्यवस्थापयन्तु-

1. गीति

2. लिखितपाठकः

3. शिरःकम्पी

4.अनर्थज्ञ

5. अल्पज्ञ

सम्यक् उत्तरम् चिनुत-

(a) 1,3, 2,5,4
(b) **1,3, 2,4,5**
(c) 2,5,3,4,1
(d) 2,3,5,4,1

परिचय: पाणिनीय शिक्षा में वेदों और शास्त्रों के अध्ययन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए पाठकों के गुणों और दोषों का वर्णन किया गया है। इसमें छह प्रकार के 'अधम' (निम्न कोटि के) पाठकों का उल्लेख एक सुप्रसिद्ध श्लोक में मिलता है।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(b) 1, 3, 2, 4, 5** है। पाणिनीय शिक्षा का संबंधित श्लोक इस प्रकार है:

"गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।

अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः॥" (पा.शि. 32)

इस श्लोक के अनुसार अधम पाठकों का शास्त्रीय क्रम निम्नलिखित है:

1. **गीती (1):** जो मंत्रों को पाठ के नियमों के बजाय गाने की तरह (गाकर) पढ़ता है।

2. **शीघ्री:** (सूची में नहीं है) जो बहुत जल्दी-जल्दी पाठ करता है।

3. **शिरःकम्पी (3):** जो पाठ करते समय अनावश्यक रूप से अपना सिर हिलाता रहता है।

4. **लिखितपाठकः (2):** जो स्मरण शक्ति के बजाय पुस्तक में लिखे हुए को देखकर ही पाठ कर पाता है।

5. **अनर्थज्ञ (4):** जो मंत्रों का अर्थ जाने बिना केवल शब्दों को रटकर पढ़ता है।

6. **अल्पकण्ठ/अल्पज्ञ (5):** जिसका स्वर अत्यंत क्षीण हो या जिसे ज्ञान कम हो (यहाँ 'अल्पकण्ठ' मूल पाठ में है, जिसे विकल्प में 'अल्पज्ञ' के रूप में इंगित किया गया है)।

अधम पाठकों की तालिका:

क्रम	पाठक का प्रकार	दोष का विवरण
1	**गीती**	संगीत की तरह गाना (स्वर प्रक्रिया का उल्लंघन)
2	**शीघ्री**	अत्यधिक वेग से पढ़ना
3	**शिरःकम्पी**	शारीरिक अस्थिरता (एकाग्रता का अभाव)
4	**लिखितपाठक**	हस्तलिखित प्रति पर निर्भरता
5	**अनर्थज्ञ**	अर्थ का बोध न होना
6	**अल्पकण्ठ**	बहुत ही धीमे या अस्पष्ट स्वर में पढ़ना

रोचक तथ्य:

• **श्रेष्ठ पाठक (पाठकगुणाः):** जिस प्रकार अधम पाठक छह हैं, उसी प्रकार उत्तम पाठक के भी छह गुण बताए गए हैं: *माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः। धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥* (अर्थात् मधुरता, अक्षरों की स्पष्टता, पदों का सही विच्छेद, सुंदर स्वर, धैर्य और सही लय)।

• **सांस्कृतिक महत्व:** यह वर्गीकरण दर्शाता है कि प्राचीन काल में मौखिक परंपरा (Oral Tradition) में उच्चारण की शुद्धता और अर्थबोध को कितना महत्व दिया जाता था।

Q50. परस्परं समुचितं मेलयत –

LIST I	LIST II
A. भीमार्जुनौ	I. साहचर्य
B. कर्णार्जुनौ	II. प्रकरण
C. सर्वं जानाति देवः	III. विरोधिता
D. कुपितो मकरध्वजः	IV. लिङ्ग

दत्तेषु विकल्पेषु समीचीनमुत्तरं चिनुत -

(a) A-I, B-III, C-II, D-IV
(b) A-II, B-I, C-IV, D-III
(c) A- I, B-III, C-IV, D-II
(d) A-IV, B-III, C-I, D-II

परिचय: यह प्रश्न काव्यशास्त्र के **अभिधा-मूला व्यञ्जना** (अनेकार्थक शब्दों के अर्थ नियंत्रण) से संबंधित है। जब एक ही शब्द के कई अर्थ निकलते हों, तब आचार्य मम्मट ने 'काव्यप्रकाश' के द्वितीय उल्लास में 14 ऐसे कारक बताए हैं जो अर्थ को एक निश्चित दिशा में सीमित कर देते हैं।

व्याख्या: प्रश्न के अनुसार सही उत्तर **(a) A-I, B-III, C-II, D-IV** है। अनेकार्थक शब्दों के अर्थ का निर्धारण करने वाले हेतुओं का मिलान इस प्रकार है:

• **भीमार्जुनौ - साहचर्य (A-I):** यहाँ 'अर्जुन' शब्द के कई अर्थ हैं (वृक्ष, कार्तवीर्यार्जुन, पाण्डुपुत्र)। किंतु 'भीम' के साथ **साहचर्य (साथ)** होने के कारण यहाँ 'अर्जुन' का अर्थ केवल 'पाण्डुपुत्र अर्जुन' ही लिया जाएगा।

• **कर्णार्जुनौ - विरोधिता (B-III):** कर्ण और अर्जुन के बीच जगप्रसिद्ध **शत्रुता (विरोध)** है। इस विरोध के कारण यहाँ 'कर्ण' का अर्थ 'पतवार' या 'कान' न होकर केवल 'सूतापुत्र कर्ण' निश्चित होता है।

• **सर्वं जानाति देवः - प्रकरण (C-II):** 'देव' शब्द के अर्थ राजा और भगवान दोनों होते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने स्वामी या राजा के सामने खड़ा होकर यह कहता है, तो **प्रकरण (Context)** के अनुसार यहाँ 'देव' का अर्थ 'राजा' होगा।

• **कुपितो मकरध्वजः - लिङ्ग (D-IV):** 'मकरध्वज' शब्द समुद्र और कामदेव दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। किंतु 'कुपित' (क्रोधित होना) यह **लिङ्ग (चिह्न/विशेषण)** केवल चेतन (कामदेव) के लिए संभव है, जड़ समुद्र के लिए नहीं। अतः यहाँ कामदेव अर्थ निश्चित होता है।

उचित मिलान तालिका:

सूची I (उदाहरण)	**सूची II (निर्धारक तत्व)**	**निश्चित अर्थ**
भीमार्जुनौ	**साहचर्य** (Association)	पाण्डुपुत्र अर्जुन
कर्णार्जुनौ	**विरोधिता** (Enmity)	कुन्तीपुत्र कर्ण
सर्वं जानाति देवः	**प्रकरण** (Context)	राजा (सम्बोधन)
कुपितो मकरध्वजः	**लिङ्ग** (Indicator/Characteristic)	कामदेव

रोचक तथ्य:

• **मूल स्रोत:** आचार्य भर्तृहरि ने 'वाक्यपदीयम्' में सबसे पहले इन कारकों का उल्लेख किया था। बाद में आचार्य मम्मट ने इसे काव्यशास्त्र में स्थापित किया।

• **अन्य कारक:** इनके अतिरिक्त *संयोग, वियोग, अर्थ, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति* और *स्वर* भी अर्थ का नियमन करते हैं।

• **उदाहरण:** 'रामलक्ष्मणौ' में भी **साहचर्य** के कारण 'राम' का अर्थ परशुराम न होकर 'दाशरथि राम' होता है।